‘‘महोबा जनपद में संचालित ‘‘जल जीवन मिशन’’ योजना के अंतर्गत ‘‘हर घर नल–हर घर जल’’ परियोजना के प्रभाव का सहभागी मूल्यांकन के आधार पर प्रस्तुत प्रतिवेदन’’

ESTB. AUGUST 26, 1975

सर्वेक्षक संस्था

समाज कार्य विभाग,
बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झांसी (उ0प्र0)

सर्वेक्षक

डॉ0 यतीन्द्र मिश्र
विभागाध्यक्ष समाज कार्य विभाग एवं मुख्य सर्वेक्षक (परियोजना)

एवं

गठित टीम (सर्वेक्षक एवं शोध छात्र)
डॉ0 बी.आर. अम्बेडकर, समाज विज्ञान संस्थान, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झांसी

(सन् 2024)

विषय–सूची

क्रम	ग्राम/ग्राम पंचायत, वि0ख0 एवं जनपद	पृष्ठ संख्या
1.	ग्राम बरी, ग्राम पंचायत जूझर, विकास खण्ड कबरई, जनपद महोबा	1–18
2.	ग्राम बघवा खेड़ा, ग्राम पंचायत मोचीपुरा, विकास खण्ड कबरई, जनपद महोबा	19–31
3.	ग्राम गड़हरी, ग्राम पंचायत पडोरा, विकास खण्ड चरखारी, जनपद महोबा	32–44
4.	ग्राम रिहुनियां, ग्राम पंचायत पुपवारा, विकास खण्ड चरखारी, जनपद महोबा	45–58
5.	ग्राम इमलीखेड़ा, ग्राम पंचायत नौसारा, विकास खण्ड चरखारी, जनपद महोबा	59–70
6.	ग्राम बमनेथा, ग्राम पंचायत नौसारा, विकास खण्ड चरखारी, जनपद महोबा	71–84
7.	ग्राम पंचायत काशीपुरा, विकास खण्ड पनवारी, जनपद महोबा	85–98
8.	ग्राम पंचायत लिलवा, विकास खण्ड पनवारी, जनपद महोबा	99–111
9.	ग्राम धनावन, ग्राम पंचायत भटेवारा, विकास खण्ड चरखारी, जनपद महोबा	112–123
10.	ग्राम पंचायत कुरौरा डांग, विकास खण्ड चरखारी, जनपद महोबा	124–135

ग्राम बरी, ग्राम पंचायत जूझर, विकास खण्ड कबरई, जनपद महोबा

प्रापक–

राज्य पेयजल एवं स्वच्छता मिशन,

नमामि गंगे तथा ग्रामीण जलापूर्ति विभाग,

किसान बाजार, विभूति खंड, गोमती नगर, लखनऊ।

प्रेषक–

विभागाध्यक्ष,

समाज कार्य विभाग,

बुंदेलखंड विश्वविद्यालय झांसी।

विषय– *''जल जीवन मिशन'' के अंतर्गत ''हर घर नल–हर घर जल'' कार्यक्रम से बुंदेलखंड क्षेत्र के अंतर्गत सात जनपदों के प्रत्येक जनपद में चयनित 10 ग्रामों के ग्रामवार प्रभाव आकलन का प्रतिवेदन।*

1.0 विषय परिचय

''जल जीवन मिशन'' माननीय प्रधानमंत्री भारत सरकार की महत्त्वाकांक्षी परियोजना है। यह परियोजना अगस्त 2019 में सर्वप्रथम गोवा राज्य से लागू की गई। इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य 2019 से 2024 तक प्रत्येक ग्रामीण परिवार को शुद्ध पेयजल उपलब्ध

कराना है। इस योजना द्वारा भारत के प्रत्येक ग्रामीण परिवार में स्वच्छ जल की पहुंच सुनिश्चित करने हेतु नल का कनेक्शन दिये जाने तथा उस नल से प्रत्येक परिवार के प्रति सदस्य को प्रतिदिन 55 लीटर पेयजल की आपूर्ति सुनिश्चित करने लक्ष्य रखा गया है जिससे कि जल संकट के साथ ही स्वास्थ्य स्तर में भी सुधार किया जा सके।

2.0 साहित्य आकलन एवं अवलोकन

किसी–भी राष्ट्र में स्वस्थ एवं कुशल मानव संसाधन के लिए यह आवश्यक है कि उस राष्ट्र में निवास करने वाले लोग निरोग एवं स्वस्थ हों। स्वस्थ मानव संसाधन के निर्माण में संतुलित आहार एवं स्वच्छ जल की भूमिका को नजरंदाज नहीं किया जा सकता है। स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन का विकास होता है। इसलिए सम्पूर्ण स्वास्थ्य की प्राप्ति, जिसमें शारीरिक, मानसिक एवं सामाजिक स्वास्थ्य सम्मिलित है, की कल्पना शुद्ध पेयजल के अभाव में नहीं की जा सकती है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद–21 के अंतर्गत गरिमापूर्ण जीवन जीने का अधिकार भारत के प्रत्येक नागरिक को प्राप्त है। इसमें शुद्ध पेयजल का अधिकार भी एक मौलिक अधिकार के रूप में समाहित है। इसलिए सरकार का दायित्त्व है कि वह वंचित ग्रामीण आबादी तक शुद्ध पेयजल की उपलब्धता सुनिश्चित करे, ताकि उनके जीवन स्तर में सुधारात्मक बदलावों को प्रेरित किया जा सके। यदि उत्तर प्रदेश के बुन्देलखण्ड क्षेत्र की बात की जाये, तो यह क्षेत्र प्राचीन काल से ही जल संकट का सामना करता रहा है। यहां पर औसत वार्षिक वर्षा बहुत कम होती है। यहां अधिकांश वर्षा दक्षिण–पश्चिम मानसून द्वारा जुलाई से सितंबर माह के मध्य

होती है। पहाड़ी और पठारी क्षेत्र होने के कारण भूजल स्तर बहुत नीचे है। जल संकट ने यहां के जीवन को दुष्कर बनाया हुआ है। पर्याप्त और शुद्ध जल की कमी ने यहां के लोगों के समक्ष गंभीर जल संकट उत्पन्न किया है जिसका समाधान नितांत आवश्यक है। इसके समाधान के लिए भारत सरकार द्वारा 'हर घर नल–हर घर जल'' योजना संचालित की जा रही है, ताकि जल संकट के समाधान के साथ–साथ आरोग्य की प्राप्ति एवं बहु–आयामी लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सके।

3.0 प्रभाव आकलन का उद्देश्य

1. जल जीवन मिशन के अंतर्गत महोबा जनपद के विकास खण्ड कबरई के ग्राम पंचायत जूझर में अवस्थित ग्राम बरी में ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के प्रभाव का आकलन।
2. योजना क्रियान्वयन द्वारा ग्राम बरी में निवासित ग्रामीण जन के सामाजिक–आर्थिक, शैक्षिक तथा स्वास्थ्य एवं सामाजिक व्यवहार में बदलाव की स्थिति का अध्ययन।

4.0 प्रभाव आकलन की उपकल्पना

1. राज्य पेयजल एवं स्वच्छता मिशन द्वारा संचालित परियोजना ''जल जीवन मिशन'' के अंतर्गत ग्राम बरी, ग्राम पंचायत जूझर, विकास खण्ड कबरई, जनपद महोबा में कृत कार्य ''हर घर नल–हर घर जल'' से लोगों के जीवन स्तर में बदलाव आया है

2. स्वास्थ्य के स्तर में सुधार हुआ है।
3. परियोजना के संचालन से ग्रामीण जन के सामाजिक–आर्थिक एवं शैक्षिक स्थितियों में बदलाव हुआ है।
4. परियोजना के संचालन से सामाजिक मनोवृत्ति एवं सामाजिक व्यवहार में बदलाव आया है।

5.0 अध्ययन की प्रणाली एवं उपकरण

अध्ययन हेतु शोध की निम्न तकनीकि एवं उपकरणों का प्रयोग किया गया है–

1. अवलोकन
2. सहभागी मूल्यांकन

महोबा जनपद के कबरई विकास खण्ड के अंतर्गत ग्राम पंचायत जूझर एवं ग्राम बरी में संचालित ''जल जीवन मिशन'' योजना के अंतर्गत ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना द्वारा लोगों के जीवन स्तर में आये बदलाव को देखने के लिए अवलोकन एवं सहभागी मूल्यांकन विधि के आधार पर अध्ययन किया गया है। अध्ययन हेतु सर्वप्रथम बरी गांव की सकल जनसंख्या, गांव में कुल परिवारों की संख्या, कुल मतदाताओं की संख्या, गांव में निवासित जातियां, नल संयोजनों की संख्या, शक्ति संरचना, गांव में स्थित विद्यालयों की संख्या, आंगनबाड़ी तथा प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र की उपलब्धता, आय के स्त्रोत, कृषि पद्धति तथा अन्य आवश्यक जानकारियों को संग्रहित किया गया। बरी गांव के संदर्भ में समग्र जानकारी प्राप्त करने के लिए सर्वप्रथम ग्राम प्रधान हुकुम राजपूत से

संपर्क स्थापित करके परिचर्चा कर बरी ग्राम की सामाजिक–आर्थिक, शैक्षिक एवं स्वास्थ्य दशाओं के संबंध में जानकारियों को प्राप्त किया गया। बरी गांव से संबद्ध हितधारकों जैसे– पंचायत सदस्यों, गांव में संचालित विद्यालय के प्रधानाध्यापक, रोजगार सेवक और बरी गांव के सामाजिक रूप से प्रतिष्ठित लोगों से चर्चा की गई। समग्र परिचर्चा में पता चला कि गांव में एक प्राथमिक विद्यालय संचालित हैं जिसके प्रधानाध्यापक का नाम श्री

भगत सिंह राजपूत है। विद्यालय में छात्र/छात्राओं का सकल नामांकन–30 है। उक्त विद्यालय नल संयोजन से पूर्णतः संतृप्त हैं जिसके कारण नियमित रूप से स्वच्छ पेयजल

की आपूर्ति विद्यालय में हो रही है। गांव में स्थित आंगनबाड़ी केन्द्र की सहायिका श्रीमती रानी प्रजापति से बच्चों के टीकाकरण, पोषाहार एवं स्वास्थ्य के संदर्भ में जानकारी एकत्र किया गया। बरी गांव की कुल आबादी 400 है एवं मतदाताओं की संख्या–275 है। कुल परिवारों की संख्या–54 है जिन्हें नल संयोजन से पूर्णतः संतृप्त कर दिया गया है। बरी गांव में 1000 बीघा जमीन खेती योग्य है लेकिन असिंचित होने के कारण फसलों का उत्पादन बहुत कम होता है। गांव में निवासित लोगों की आय का मुख्य स्त्रोत कृषि एवं संबंधित गतिविधियां हैं। कुल आबादी की लगभग 50 प्रतिशत आबादी जीवकोपार्जन हेतु शहरों में पलायन कर गयी है। बरी गांव में बहुसंख्यक आबादी ब्राह्मणों की है उसके पश्चात् हरिजन एवं यादव हैं। ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा बरी ग्राम में नियमित रूप से स्वच्छ पेयजल की आपूर्ति हो रही है जिससे लोगों को पर्याप्त एवं शुद्ध पेयजल प्राप्त हो रहा है।

6.0 निदर्श निर्धारण

जूझर ग्राम पंचायत के ग्राम बरी की कुल जनसंख्या लगभग 400 है एवं कुल परिवारों की संख्या–54 है। गांव के प्रत्येक परिवार को नल संयोजन से आच्छादित किया जा चुका है। गांव में बहुसंख्यक आबादी ब्राह्मण जाति की है उसके बाद हरिजन एवं यादव हैं। अवलोकन एवं सहभागी मूल्यांकन पर आधारित प्रस्तुत शोध में स्तरीकृत दैव निदर्शन का प्रयोग करके प्रत्येक प्रस्तर से 10 प्रतिशत लोगों का चयन न्यादर्श के रूप में अध्ययन के लिए किया गया है। इस प्रकार से गांव की कुल जनसंख्या से अलग–अलग जातियों को वर्गीकृत करते हुये समानुपात में प्रत्येक जाति से 1/10 भाग को अध्ययन

में न्यादर्श के रूप में सम्मिलित किया गया। कुल 400 / 10 = 40 न्यादर्शों, जिसमें 18 वर्ष से ऊपर के स्त्री एवं पुरुष सम्मिलित हैं, बात करके उनके जीवन स्तर पर ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा आये बदलावों को जानने का प्रयास प्रस्तुत शोध में किया गया।

इसके अतिरिक्त प्रस्तुत अध्ययन में ग्राम बरी के हितधारकों जिसमें ग्राम प्रधान श्री हुकुम राजपूत एवं ग्राम पंचायत के सदस्यों से योजना लागू होने के पश्चात् आये बदलावों के संदर्भ में परिचर्चा किया गया। ग्राम में संचालित प्राथमिक विद्यालय के प्रधानाध्यापक श्री भगत सिंह राजपूत एवं शिक्षकों तथा विद्यालय में नामांकन छात्र / छात्राओं से भी ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के पश्चात् आये परिवर्तन के संदर्भ में चर्चा किया गया। गांव में आंगनबाड़ी केन्द्र की सहायिका श्रीमती रानी प्रजापति को भी हितधारकों के रूप में सम्मिलित करके ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से बच्चों एवं माताओं के स्वास्थ्य स्तर में आने वाले बदलावों के संदर्भ वार्ता किया गया। बरी ग्राम के सामाजिक रूप से प्रतिष्ठित एवं स्वीकृत लोगों को भी हितधारकों के रूप में सम्मिलित करके योजना लागू होने के बाद आने वाले परिवर्तनों के संदर्भ में आवश्यक जानकारियां प्राप्त की गयी। इस प्रकार से प्रस्तुत अध्ययन में कुल 40 न्यादर्शों जिसमें 20 महिला एवं 20 पुरूष तथा गांव के हितधारकों को सम्मिलित किया गया है।

7.0 समाविष्ट के मानदण्ड

ग्राम बरी ग्राम पंचायत जूझर, विकास खण्ड कबरई, जनपद महोबा में सरकार द्वारा संचालित योजना ''हर घर नल–हर घर जल'' के प्रभाव मूल्यांकन हेतु बरी ग्राम की सम्पूर्ण जनसंख्या का 1/10 भाग (40 न्यादर्श) और गांव के हितधारकों को अध्ययन में सम्मिलित किया गया है, जिसमें 18 वर्ष से ऊपर के स्त्री एवं पुरूष सम्मिलित हैं।

8.0 बहिष्करण के मानदण्ड

प्रस्तुत अध्ययन में बरी ग्राम से संबंध ना रखने वाले व्यक्तियों को न्यादर्श एवं हितधारकों के रूप में सम्मिलित नहीं किया गया है।

9.0 अवलोकन एवं सहभागी मूल्यांकन के आधार पर प्राप्त परिणाम

''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने लोगों के जीवन के विविध पक्षों को प्रभावित कर सकारात्मक बदलावों को लाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन् किया है। प्रस्तुत अध्ययन में ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा कृत कार्य से बरी गांव के लोगों में आये बदलावों का वर्णन किया गया है जो निम्नलिखित है–

9.1 सामाजिक परिवर्तन के संदर्भ में

अध्ययन में न्यादर्श रूप में सम्मिलित कुल 20 महिलाओं एवं हितधारकों से ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के संचालन के पश्चात् महिलाओं के जीवन स्तर में आये

बदलावों को जानने का प्रयास किया गया। न्यादर्श रूप में सम्मिलित 97 प्रतिशत महिलाओं ने बताया कि योजना द्वारा जल संकट की समस्या समाप्त होने से महिलाओं

का कार्य बोझ कम हुआ है जिससे अब उनके समय में बचत हुई है। 98 प्रतिशत महिला न्यादर्शों ने कहा कि पेट संबंधी बीमारी कम होने से उनका स्वास्थ्य स्तर पूर्व की अपेक्षा बेहतर हुआ है। 100 प्रतिशत महिलाओं ने स्वीकार किया कि ''हर घर नल–हर घर जल''

योजना से उनकी सामाजिक प्रस्थिति में गुणात्मक बदलाव आया है। हितधारकों से हुई परिचर्चा पर पता चला कि जल संचयन की जिम्मेदारी महिलाओं और बच्चों की होने के कारण उनका अधिकांश समय जल संग्रह पर ही चला जाता था, फिर भी स्वच्छ पेयजल प्राप्त नहीं हो पाता था। अब योजना लागू होने से जल संकट की समस्या समाप्त हो गई है जिससे महिलाओं एवं बच्चों को जल संग्रह हेतु परेशान होने की जरूरत नहीं है। न्यादर्श में सम्मिलित 90 प्रतिशत महिलाओं ने बताया कि मटके एवं बाल्टी में दूर से पानी भरकर लाने के कारण उनकी कमर एवं गर्दन में दर्द बना रहता था जिससे अब निजात मिल गया है। 100 प्रतिशत महिला न्यादर्शों ने स्वीकार किया कि अब इलाज पर खर्च होने वाले पैसे में बचत हुई है जिसका उपयोग वह बच्चों की पढ़ाई एवं आय अर्जन वाली गतिविधियों पर कर रही हैं। समय, स्वास्थ्य एवं धन की बचत से परिवार में महिलाओं की भूमिका में उल्लेखनीय बदलाव आया है जिससे उनका सम्मान परिवार में बढ़ा है। अध्ययनकर्ता द्वारा अवलोकन में पाया गया कि महिलाओं में सकारात्मक सोच का विकास हुआ है। उनके स्वास्थ्य स्तर में सुधार आने से उनकी शारीरिक एवं मानसिक गतिविधियां बढ़ी हैं। कुल मिलाकर ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा महिलाओं की प्रस्थिति में अनुकरणीय बदलाव दृष्टिगोचर हो रहे हैं। अध्ययन में यह भी पाया गया कि बरी ग्राम के कुछ लोग आपूर्ति किये जाने वाले जल के क्लोरीनीकरण से आने वाली महक के कारण जल का उपयोग पेयजल के रूप में नहीं कर रहे हैं। अतः आवश्यक है कि लोगों में शिक्षा, चेतना एवं जागरूकता लाया जाये, ताकि वर्णित योजना के प्रभावी परिणाम प्राप्त हो सके।

9.2 शिक्षा की स्थिति में बदलाव

ग्राम बरी में एक प्राथमिक विद्यालय शासन द्वारा संचालित किया जा रहा है। गांव के अधिकांश बच्चे प्राथमिक विद्यालय में ही पढ़ने आते हैं। विद्यालय में सकल नामांकन 30 है। चूंकि गांव छोटा है, इसलिए विद्यालय में नामांकित बच्चों की संख्या भी कम है।

विद्यालय को ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से पूर्णतः आच्छादित कर दिया गया है, जिसके कारण विद्यालय में मूलभूत सुविधायें उपलब्ध हो पायी हैं। विद्यालय में मूलभूत सुविधाओं की उपलब्धता से बच्चों की नियमित उपस्थिति में बढ़ोत्तरी देखी जा सकती है। प्रधानाचार्य के अनुसार जब से योजना द्वारा विद्यालय को आच्छादित करके नियमित पेयजल की आपूर्ति सुनिश्चित की गयी है, तब से बच्चों के नामांकन एवं नियमित

उपस्थिति में वृद्धि हुई है। प्रधानाचार्य ने बताया कि पहले बच्चों को विद्यालय में आने के लिए गांव में जाकर अभिभावकों से कहना पड़ता था, जबकि अब बच्चे स्वतः ही विद्यालय आ जाते हैं एवं अभिभावक भी नियमित रूप से बच्चों को नहला–धुलाकर तैयार करके विद्यालय भेजते हैं। 95 प्रतिशत न्यादर्श में सम्मिलित लोगों ने बताया कि योजना संचालित होने के बाद से बच्चों के स्वास्थ्य स्तर में सुधार आया है और अभिभावकों में भी शिक्षा के प्रति जागरूकता उत्पन्न हुई है जिसके कारण वह शिक्षा की महत्ता को समझते हुये प्रतिदिन अपने बच्चों को विद्यालय भेज रहे हैं और घर पर भी उनकी शिक्षा पर ध्यान दे रहे हैं। विद्यालय का खुले में शौच मुक्त होने से बालिकाओं की विद्यालय में नियमित उपस्थिति बढ़ी है। विद्यालय के शिक्षकों ने बताया कि बच्चों की बोध क्षमता में योजना लागू होने के बाद से सुधार आया है। अब वह पढ़ाये गये विषय को कम समय में याद कर पा रहे हैं। विद्यालय में नामांकित बच्चों से हुई चर्चा में पाया गया कि बच्चों में साफ–सफाई के प्रति जागरूकता आयी है और वह प्रतिदिन स्नान करके विद्यालय में पढ़ने आते हैं। जब उनसे पूछा गया कि क्या पहले आप लोग स्नान करके विद्यालय नहीं आते थे, तो बच्चों ने बताया कि पहले पानी की कमी के कारण तीसरे–चौथे दिन स्नान करता था, इसलिए नियमित स्नान करके विद्यालय नहीं आ पाता था। बच्चों ने यह भी बताया कि अब विद्यालय में ना आने पर मम्मी–पापा द्वारा डांटा जाता है जिसके डर से वह नियमित विद्यालय आते हैं। अतएव अध्ययनकर्ता द्वारा अवलोकन से यह स्पष्ट है कि बरी ग्राम में ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में प्रगति हुई है।

ग्राम के लोगों में शिक्षा के प्रति जागरूता आना इस बात का द्योतक है कि वर्णित योजना के सकारात्मक प्रभाव शिक्षा पर पड़े हैं।

9.3 स्वास्थ्य संबंधी बदलाव

स्वच्छ जल एवं स्वास्थ्य एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। एक के अभाव में दूसरे की कल्पना नहीं की जा सकती है। जल जनित अनेक बीमारियां स्वास्थ्य को नकारात्मक रूप से प्रभावित करती हैं। ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने जल संकट के साथ ही उत्तम स्वास्थ्य पर भी ध्यान केन्द्रित किया है। न्यादर्श में सम्मिलित 100 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार जल जनित बीमारियों में ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना लागू होने के बाद से कमी आयी है। 98 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार बीमारियों में कमी आने से धन एवं समय की बचत होने के साथ ही शारीरिक स्वास्थ्य में सुधार आया है। 97 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना संचालित होने के बाद से पेचिस, दस्त, उल्टी एवं पीलिया जैसी बीमारियों में कमी देखने को मिल रही है। 96 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि पूर्व में दूषित जल पीने के कारण इन बीमारियों का प्रकोप ज्यादा होता था। अध्ययन में सम्मिलित 92 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि बाल्टी में पानी भरकर रख देने पर उसका रंग पीला पड़ जाता था जिससे वह पीने योग्य नहीं रह जाता था फिर भी मजबूरी में पीना पड़ता था, लेकिन अब स्वच्छ पेयजल की आपूर्ति होने से दूषित जल पीने से निजात मिला है। अध्ययनकर्ता द्वारा अवलोकन में पाया गया कि गांव के लोगों के शारीरिक, मानसिक एवं

संवेगात्मक स्वास्थ्य में सुधार आया है। लोगों में योजना के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति

का विकास हुआ है। इस प्रकार से योजना ने बरी गांव के लोगों के स्वास्थ्य को उन्नत करके उन्हें खुशहाल जीवन प्रदान किया है।

9.4 सामाजिक व्यवहार में बदलाव

100 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि पूर्व में गांव के केवल सम्पन्न लोगों तक ही स्वच्छ पेयजल की पहुंच सुलभ थी, निम्न आय एवं जाति के लोगों द्वारा स्वच्छ जल पर होने वाले खर्च को वहन कर पाना मुमकिन नहीं था। इसलिए उन्हें दूषित जल मजबूरी में पीना पड़ता था जिसके कारण स्वास्थ्य संबंधी चुनौतियां उत्पन्न होती थी। न्यादर्श में सम्मिलित निम्न जाति के उत्तरदाताओं ने बताया कि उच्च जाति के लोगों के नलों में पानी पीने से हम लोगों को रोक थी। ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा प्रत्येक परिवार को नियमित शुद्ध जल की आपूर्ति सुनिश्चित करके उक्त समस्या का समाधान किया गया और, जो जल जनित भेदभाव निम्न जाति के लोगों के साथ होता था, उसमें भी अंकुश लग पाया। वर्णित योजना ने गांव बरी में सामाजिक समरसता बनाने में उल्लेखनीय भूमिका निभायी है। योजना ने जल जनित लड़ाई–झगड़ों का शमन करके गांव में शांति का माहौल सुनिश्चित किया है। लोगों में आधुनिक मूल्यों के समावेश से उनकी सोच में गतिशीलता आयी है। सांस्थानिक मूल्यों में आये बदलाव ने लोगों के व्यवहार को परिवर्तित कर सहकार एवं सहयोग की भावना को जन्म दिया है। ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने बाल विवाह जैसी कुरीति को भी कम करने में सहायता की है क्योंकि लोगों की प्रगतिशील सोच ने इस समस्या का समाधान उपलब्ध कराया है। यह कहना समीचीन होगा कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने बरी गांव में सामाजिक गतिशीलता को प्रेरित एवं आधुनिक मूल्यों को स्वीकार करने में सहायता किया

है। लोगों के व्यवहार को सकारात्मक रूप से परिवर्तित करने में योजना की भूमिका को नजरंदाज नहीं किया जा सकता है।

9.5 रोजगार के अवसर

बरी गांव की लगभग 50 प्रतिशत आबादी जीवकोपार्जन हेतु पलायन कर चुकी है। गांव में जमीन तो पर्याप्त है लेकिन असिंचित होने के कारण फसलों का उत्पादन प्रभावित होता है। अधिकतर लोगों के आय का स्त्रोत कृषि एवं मजदूरी है। ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा रोजगार के क्षेत्र में भी विविधता आयी है। महिलाओं और युवाओं की कृषि एवं पशुपालन में भागीदारी बढ़ी है। महिलायें सिलाई–कढ़ाई जैसे कार्यों को करके भी आय उत्पन्न कर रही हैं। युवा लोगों का रूझान गांव के प्रति सकारात्मक हुआ है क्योंकि अब उन्हें जल संकट जैसी समस्या ने मुक्ति मिल चुकी है। न्यादर्श में सम्मिलित 90 प्रतिशत युवा उत्तरदाताओं ने बताया कि वह गांव में रहकर कृषि एवं पशुपालन के साथ ही मजदूरी एवं छोटे–मोटे धन्धों को करके जीवकोपार्जन करने के इच्छुक हैं। इन युवाओं ने यह भी बताया कि पूंजी की समस्या के कारण वह स्वरोजगार नहीं कर पाते हैं, यदि सरकार द्वारा कुछ सहायता कर दिया जाये तो हम लोगों की बेरोजगारी समाप्त हो सकती है। उत्तरदाता के रूप में सम्मिलित 95 प्रतिशत युवाओं ने बताया कि युवाओं को सरकार द्वारा कौशल प्रशिक्षण भी देना चाहिए जिससे कि कुशल कामगार के रूप में हम लोग काम कर सकें और अधिक आय प्राप्त कर सकें। ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना लागू होने के बाद से युवाओं के पलायन में कमी आयी है

लेकिन अधिक नहीं। यद्यपि कि युवाओं में आत्मविश्वास लाने में यह योजना सफल रही है। युवाओं में आत्मनिर्भरता का भाव योजना के सफल संचालन से जागृत हुआ है जिससे उनमें संतुष्टि का भाव देखा जा सकता है।

शासन द्वारा संचालित एवं पोषित ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना जिस लक्ष्य को लेकर संचालित की गयी थी, उसकी पुष्टि प्रस्तुत अध्ययन के अंतर्गत अवलोकन एवं सहभागी मूल्यांकन के आधार पर प्राप्त आंकड़े करते है। ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा ग्राम बरी, ग्राम पंचायत जूझर, विकास खण्ड कबरई, जनपद महोबा में अनुकरणीय बदलाव आये हैं। शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, सामाजिक व्यवहार में परिवर्तन, लैंगिक समानता, महिला सशक्तिकरण को वर्णित योजना द्वारा पोषण प्राप्त हुआ है। गांव के लोगों में उच्च स्तर की संतुष्टि योजना के प्रति देखी जा सकती है। यहां यह भी उल्लेख करना आवश्यक है कि गांव के लोगों में जल उपयोग के प्रति असंवेदनशीलता देखी गयी, जिसके कारण जल का अत्यधिक अपव्यय हो रहा है। दूसरी बात बरी गांव के कुछ लोगों में जल उपयोग के प्रति भ्रांतियां है, गांव के कुछ लोगों ने बताया कि जल से महक (क्लोरीनीकरण के कारण) आने के कारण वह इसके उपयोग के प्रति सशंकित हैं, उन्हें डर है कि उनका स्वास्थ्य खराब हो सकता है। अतः यहां यह कहना समीचीन होगा कि गांव के लोगों में जागरूकता लाने की आवश्यकता है जिससे उनकी भ्रांतियों को दूर करते हुये ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के लक्ष्यों को समुचित रूप से प्राप्त किया जा सके। यद्यपि कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा बरी गांव में

सामाजिक बदलाव एवं विकास को प्रोत्साहित किया गया है जिसके उदाहरणीय परिणाम सामने आ रहे हैं, जो लोगों की संतुष्टि एवं खुशहाली में वृद्धि कर रहा है।

ग्राम बघवा खेड़ा, ग्राम पंचायत मोचीपुरा, विकास खण्ड कबरई, जनपद महोबा

ग्राम बघवा खेड़ा, ग्राम पंचायत मोचीपुरा, विकास खण्ड कबरई, जनपद महोबा में संचालित ''जल जीवन मिशन'' योजना के अंतर्गत ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना

द्वारा लोगों के जीवन स्तर में आये बदलाव को जानने के लिए अवलोकन एवं सहभागी मूल्यांकन विधियों का प्रयोग करके अध्ययन कार्य सम्पन्न किया गया है। अध्ययन हेतु सर्वप्रथम बघवा खेड़ा गांव में निवासित जनसंख्या, गांव में कुल परिवारों की संख्या, कुल

मतदाताओं की संख्या, गांव में निवासित जातियां, नल संयोजनों की संख्या, शक्ति संरचना, गांव में स्थित विद्यालयों की संख्या, आंगनबाड़ी तथा प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र की उपलब्धता, आय के स्त्रोत, कृषि पद्धति तथा अन्य आवश्यक जानकारियों को संग्रहित किया गया। बघवा खेड़ा गांव के संदर्भ में समग्र जानकारी प्राप्त करने के लिए सर्वप्रथम ग्राम प्रधान श्रीमती फूला देवी अहिरवार से संपर्क स्थापित करके परिचर्चा किया गया एवं बघवा खेड़ा ग्राम की सामाजिक–आर्थिक, शैक्षिक एवं स्वास्थ्य दशाओं के संबंध में जानकारियों को प्राप्त किया गया। बघवा खेड़ा गांव से संबद्ध हितधारकों जैसे– पंचायत सदस्यों, गांव में संचालित विद्यालय के प्रधानाध्यापक, रोजगार सेवक और बघवा खेड़ा गांव के सामाजिक रूप से प्रतिष्ठित लोगों से चर्चा आयोजित की गई।

बघवा ग्राम के लोगों एवं हितधारकों से समग्र परिचर्चा में पता चला कि गांव में एक प्राथमिक विद्यालय शासन द्वारा संचालित है जिसकी प्रधानाध्यापिका श्रीमती गोल्डी सिंह हैं। विद्यालय में छात्र/छात्राओं का सकल नामांकन–30 है। विद्यालय नल संयोजन से पूर्णतः संतृप्त हैं जिसके कारण नियमित रूप से स्वच्छ पेयजल की आपूर्ति विद्यालय में हो रही है। गांव में कोई–भी आंगनबाड़ी केन्द्र संचालित नहीं है। बघवा खेड़ा गांव की कुल आबादी 900 एवं मतदाताओं की संख्या–530 है। गांव में कुल परिवारों की संख्या–120 है एवं नल संयोजनों की संख्या–68 है जबकि नल संयोजन का लक्ष्य–71 है। इससे निर्धारित होता है कि बघवा ग्राम नल संयोजन से लगभग संतृप्त हो चुका है। गांव के सभी लोगों को ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से स्वच्छ पेयजल की नियमित रूप से आपूर्ति हो रही है। उक्त ग्राम में कुल जमीन लगभग 2000 बीघा है

जिसमें लगभग 70 प्रतिशत पर खेती की जाती है। कुल कृषि योग्य जमीन में 70 प्रतिशत उपजाऊ एवं 30 प्रतिशत अनुपजाऊ है। गांव में खेती योग्य जमीन में मुख्यतः दलहन का उत्पादन होता है क्योंकि गांव की जमीन असिंचित क्षेत्र में आने के कारण पानी का अभाव रहता है। बघवा खेड़ा गांव के लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि है, इसके अतिरिक्त क्रेशर में मजदूरी भी गांव के लोग करते हैं। लगभग 5 प्रतिशत आबादी जीवकोपार्जन हेतु गांव से पलायन करके दिल्ली, मुंबई, सूरत जैसे बड़े शहरों में चली गयी है।

नोट : *अध्ययन का उद्देश्य, उपकल्पना, प्रणाली तथा उपकरण पूर्व वर्णित विषय के अनुसार ही सुनिश्चित किया गया है।*

1.0 निदर्श निर्धारण

समग्र के रूप में बघवा खेड़ा ग्राम की कुल जनसंख्या–900 में से न्यादर्शों का चयन किया गया है। न्यादर्श चयन में ग्राम में निवासित सभी जाति के लोगों को समान प्रतिनिधित्त्व प्रदान किया गया है। स्तरीकृत दैव निदर्शन विधि का प्रयोग करके ग्राम बघवा की कुल जनसंख्या के 1/10 वें भाग को प्रत्येक प्रस्तर से अध्ययन में सम्मिलित किया गया है (900/10 = 90)। इस प्रकार प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श के रूप में कुल 90 लोगों (महिला और पुरूष) को, जो कि बघवा खेड़ा ग्राम के निवासी हैं, सम्मिलित करके उनके जीवन में योजना से आये बदलावों की जानकारी प्राप्त की गयी। अध्ययन में ग्राम बघवा खेड़ा के हितधारकों को भी सम्मिलित किया गया। न्यादर्श में किसी–भी

ऐसी इकाई का चयन नहीं किया गया है, जो ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से आच्छादित नहीं है।

2.0 समाविष्ट के मानदण्ड

ग्राम बघवा खेड़ा, ग्राम पंचायत मोचीपुरा में सरकार द्वारा संचालित योजना ''हर घर नल–हर घर जल'' के प्रभाव मूल्यांकन हेतु ग्राम की सम्पूर्ण जनसंख्या का 1/10 वें भाग के साथ ही ग्राम के सभी हितधारकों को अध्ययन का आधार बनाया गया, जिसमें 18 वर्ष से ऊपर के स्त्री एवं पुरूष सम्मिलित हैं।

3.0 बहिष्करण के मानदण्ड

प्रस्तुत अध्ययन में किसी–भी ऐसे व्यक्ति को सम्मिलित नहीं किया गया है, जो ग्राम बघवा खेड़ा से सम्बद्ध और वर्णित योजना का लाभार्थी नहीं था। इसके अतिरिक्त नल संयोजन से वंचित परिवारों के लोगों को भी न्यादर्श रूप में सम्मिलित नहीं किया गया है। ऐसे हितधारक जो गांव से सम्बद्धता नहीं रखते हैं उनको भी अध्ययन में सम्मिलित नहीं किया गया है।

4.0 परिणाम एवं चर्चा

''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने लोगों के जीवन के विविध पक्षों को प्रभावित कर सकारात्मक बदलावों को लाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया है। प्रस्तुत अध्ययन में ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा कृत कार्य से बघवा खेड़ा

ग्राम के लोगों के जीवन स्तर में आये बदलावों का वर्णन किया गया है जो निम्नलिखित है–

4.1 सामाजिक परिवर्तन के संदर्भ में

इस भाग में ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना संचालित होने के पश्चात् महिलाओं के जीवन स्तर में आये बदलावों का अध्ययन किया गया है। न्यादर्श रूप में

सम्मिलित कुल 90 न्यादर्शों में 45 महिलाओं (50 प्रतिशत) को सम्मिलित किया गया है।

न्यादर्श रूप में सम्मिलित कुल 45 महिलाओं से प्राप्त आंकड़ों के आधार पर महिलाओं के जीवन स्तर में आये बदलावों का वर्णन यहां किया गया है जो इस प्रकार है–

न्यादर्श में सम्मिलित 100 प्रतिशत महिलाओं ने बताया कि योजना लागू होने के बाद से पेट संबंधी बीमारियों में कमी आयी है। 98 प्रतिशत ने बताया कि डॉक्टर के पास इलाज के लिए दिये जाने वाले पैसे की बचत हुयी है। 100 प्रतिशत ने बताया कि शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य में सुधार आया है। 92 प्रतिशत महिलाओं ने बताया कि समय बचत होने से वह बच्चों की देखभाल एवं पढाई–लिखाई पर पूर्व की अपेक्षा अधिक समय दे पा रही हैं। 95 प्रतिशत महिलाओं ने स्वीकार किया कि परिवार में उनका सम्मान ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना लागू होने के बाद से बढ़ा है। न्यादर्श में सम्मिलित 100 प्रतिशत महिलाओं ने बताया कि दूषित जल से अब मुक्ति मिल गयी है। 93 प्रतिशत महिलाओं ने बताया कि आय अर्जन वाली गतिविधियों में उनकी भागीदारी बढ़ी है। 100 महिला न्यादर्शों ने बताया कि जल उपलब्धता से शौचालय का प्रयोग वह नियमित रूप से कर रही हैं जिसके कारण बीमारी एवं उनके सम्मान को संरक्षण मिला है। इस प्रकार से स्पष्ट है कि वर्णित योजना ने महिलाओं के जीवन स्तर में सकारात्मक बदलावों को प्रेरित करके उनके सशक्तिकरण में योगदान दिया है। यहां इस तथ्य का भी उल्लेख करना आवश्यक है कि वर्णित योजना द्वारा आपूर्ति किये जाने वाले जल का उपयोग शत–प्रतिशत हो, इसके लिए लोगों में जागरूकता एवं चेतना का विकास करने की आवश्यकता है। साथ ही जल के अपव्यय को रोकने के लिए भी संवेदनशीलता एवं पेयजल के महत्त्व के प्रति जागरूकता लाने की जरूरत है।

4.2 शिक्षा की स्थिति में बदलाव

बघवा खेड़ा ग्राम में एक प्राथमिक विद्यालय शासन द्वारा संचालित किया जा रहा है। विद्यालय में कुल 30 विद्यार्थी नामांकित हैं। विद्यालय को ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से पूर्णतः आच्छादित किया जा चुका है जिसके कारण शुद्ध पेयजल की नियमित

आपूर्ति विद्यालय में हो रही है। जल की आपूर्ति से विद्यालय में बने शौचालय भी स्वच्छ एवं उपयोग के लिए तैयार हो गये हैं। विद्यालय की प्रधानाध्यापिका गोल्डी सिंह से हुई परिचर्चा पर पता चला कि बच्चों में स्वच्छता के प्रति जागरूकता आयी है और अभिभावक भी बच्चों की स्वच्छता एवं शिक्षा पर योजना संचालित होने के बाद से पर्याप्त ध्यान दे रहे हैं। 96 प्रतिशत न्यादर्शों ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना लागू

होने के बाद से उनमें शिक्षा के प्रति जागरूकता आयी है। 95 प्रतिशत ने बताया कि बालिकाओं की शिक्षा पर भी उतना ही ध्यान दिया जा रहा है जितना कि बालकों की शिक्षा पर। विद्यालय के शिक्षकों से हुई परिचर्चा में पता चला कि अपेक्षाकृत बालिकाओं का नामांकन विद्यालय में बढ़ा है और ड्रापआउट की समस्या भी विद्यालय में कम हुई है। 96 प्रतिशत न्यादर्शों ने बताया कि बच्चों की शिक्षा पर पूर्व की अपेक्षा वह अधिक खर्च कर रहे हैं क्योंकि अब इलाज पर होने वाले खर्च की बचत हो रही है और आय अर्जन वाली गतिविधियों में भूमिका बढ़ने से आय में वृद्धि हुई है। अध्ययनकर्ता द्वारा गांव के समग्र अवलोकन में पाया गया कि बच्चों की शिक्षा में सुधार आया है और उनके ज्ञान में भी वृद्धि हुई है। अभिभावकों में भी शिक्षा की महत्ता के प्रति चेतना उत्पन्न हुई है जिससे बच्चों का भविष्य सुधर रहा है।

4.3 स्वास्थ्य संबंधी बदलाव

"हर घर नल–हर घर जल" योजना ने बघवा खेड़ा ग्राम में जल संकट की स्थिति से निपटने में बहुत सहायता की है जैसा कि 100 प्रतिशत न्यादर्शों ने बताया। 98 प्रतिशत न्यादर्शों ने कहा कि वर्णित योजना लागू होने के बाद से बीमारियों में कमी आयी है। 98 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि बीमारियों में कमी आने से धन एवं समय की बचत होने के साथ ही शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य उन्नत हुआ है। 95 प्रतिशत न्यादर्शों ने कहा कि वर्णित योजना के संचालन से पेचिस, उल्टी, दस्त तथा पीलिया एवं अन्य जल जनित बीमारियों से बहुत हद तक मुक्ति मिली है। 100 प्रतिशत महिला न्यादर्शों ने बताया कि उनके स्वास्थ्य में सुधारात्मक परिवर्तन आया है। युवाओं एवं वृद्धों के स्वास्थ्य

स्तर में भी सुधार आया है। 100 प्रतिशत न्यादर्शों ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से गांव में स्वच्छता आयी है और अब प्रत्येक व्यक्ति नियमित रूप से स्नान कर रहा है जिसके कारण चर्म रोगों से भी निजात मिला है। शोधकर्ता द्वारा सहभागी

मूल्यांकन में पाया गया कि बघवा खेड़ा ग्राम के लोगों में स्वास्थ्य लाभ की प्राप्ति वर्णित योजना द्वारा हुई है। लोगों का कार्य प्रदर्शन बेहतर हुआ है और वह जो भी काम कर रहे हैं उसमें उनका मन लग रहा है। अतः यह कहना समीचीन होगा कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने स्वास्थ्य एवं आरोग्य प्राप्ति की दिशा में सराहनीय कार्य किया है जिससे बघवा खेड़ा गांव की जनता में संतुष्टि का भाव देखा जा सकता है।

4.4 सामाजिक व्यवहार में बदलाव

ग्राम बघवा खेड़ा में निवासित प्रत्येक परिवार को ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा स्वच्छ पेयजल की आपूर्ति सुनिश्चित की जा रही है। योजना लागू होने के पूर्व गांव के कुछ अमीर एवं उच्च जाति के लोगों तक ही स्वच्छ पेयजल की पहुंच सुलभ

थी। गांव में निवासित निम्न आय वर्ग एवं जाति के लोग स्वच्छ पेयजल से वंचित थे जिसके कारण गांव में जल जनित भेदभाव की स्थिति उत्पन्न थी। न्यादर्श में सम्मिलित 96 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से जल संकट का समाधान हुआ है और सामाजिक भेदभाव को कम करने में भी मदद मिली है। 95 प्रतिशत ने बताया कि योजना ने जल संकट से उत्पन्न लड़ाई–झगड़ों का शमन

करने में भी महती भूमिका का निर्वहन किया है। 100 प्रतिशत न्यादर्शों के अनुसार ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से गांव में सहकार एवं सहयोग का माहौल निर्मित हुआ है, गांव में एकता में वृद्धि हुई है, अपनापन का विकास हुआ है, सह–अस्तित्त्व की भावना विकसित हुयी है। सामाजिक मूल्यों में बदलाव आने से लोकतान्त्रिक मूल्यों को प्रोत्साहन मिला है। 90 प्रतिशत लोगों ने बताया कि अब वह अपने बच्चों का बाल विवाह नहीं करेंगे और ना ही स्वयं करेंगे (जो अविवाहित एवं 21 वर्ष से कम आयु के पुरूष हैं)। अतएव यह कहा जा सकता है कि बघवा खेड़ा ग्राम में ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने सामाजिक गतिशीलता को प्रोत्साहित करने के साथ ही सामाजिक कुरीतियों के प्रति भी लोगों को संवेदनशील बनाने में महत्त्वपूर्ण एवं उदाहरणीय योगदान दिया है।

4.5 रोजगार के अवसर

बघवा खेड़ा ग्राम की अधिकांश आबादी कृषि कार्यों से जीवकोपार्जन कर रही है। गांव के लगभग 5 प्रतिशत लोग जीवकोपार्जन हेतु शहरों/महानगरों में चले गये हैं। कुछ लोग क्रेशर में दिहाड़ी–मजदूरी करके जीवन–यापन करते हैं। इसके अतिरिक्त कुछ लोग किराने की दूकान, गोलगप्पे का ठेला, निर्माण कार्य में मजदूरी जैसे कार्यों को गांव में ही रहकर करते हैं। 100 प्रतिशत न्यादर्शों ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना लागू होने के बाद से कृषि एवं संबंधित गतिविधियों में सकारात्मक बदलाव आया है जिससे महिलाओं एवं युवाओं का रूझान कृषि की ओर बढ़ा है। योजना द्वारा स्वास्थ्य स्तर में सुधार आने से युवाओं की कार्य क्षमता बढ़ी है जिससे वह अधिक काम करके अधिक आय का सृजन कर रहे हैं। महिलाओं के समय में बचत होने से उनकी भूमिका

सिलाई–कढ़ाई जैसे कार्यों में बढ़ी है जिससे उन्हें आय की प्राप्ति हो रही है। 96 प्रतिशत न्यादर्शों ने माना कि युवाओं के पलायन दर में कमी आयी है क्योंकि जल संकट समाप्त हो जाने से युवा लोग शहरों की अपेक्षा गांव में ही रहकर स्वरोजगार को प्राथमिकता दे रहे हैं। ध्यातव्य है कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने स्वास्थ्य स्तर में सुधार करने के साथ ही समय एवं धन की भी बचत की है, जिसका उपयोग गांव के लोगों द्वारा स्वरोजगार जैसी आय सृजन वाली क्रियाओं में किया जा रहा। इस कारण से युवाओं के पलायन में कमी आने के साथ ही उन्हें आय अर्जक गतिविधियों में संलग्न कर, उनकी आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति में भी वर्णित योजना महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रही है जिससे गांव के लोगों में संतुष्टि का भाव उत्पन्न हुआ है और वह सुखद जीवन जी रहे हैं।

निष्कर्षतः प्रस्तुत अध्ययन से स्पष्ट है कि शासन द्वारा संचालित ''जल जीवन मिशन'' योजनांतर्गत ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में सफल रही है। बघवा खेड़ा ग्राम के अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष सिद्ध करते हैं कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने उक्त गांव में अनुकरणीय बदलावों को लाने में योगदान दिया है। यह योजना अपने लक्ष्यों के अनुरूप ही कार्य कर रही है जिससे गांव की जनता का जीवन स्तर उच्च हो रहा है। यहां इस तथ्य पर भी प्रकाश डालना आवश्यक है कि गांव के लोगों में जल संचयन के प्रति संवेदनशीलता एवं चेतना का अभाव है जिसके कारण जल का अधिक अपव्यय हो रहा है। अवलोकन में देखा गया कि कई नल नियमित रूप से खुले रहते हैं और जल का व्यर्थ बहाव होता रहता है।

जल उपयोग के प्रति भी लोगों में कुछ गलत धारणायें व्याप्त हैं जिसका समाधान अतिआवश्यक है। इस प्रकार से यह कहा जा सकता है कि उक्त योजना ने गांव के लोगों का समग्र विकास सुनिश्चित किया है तथा गांव की जनता की आकाक्षाओं पर यह योजना खरी उतरी है। गांव के लोगों में जागरूकता लाकर योजना को और प्रभावी बनाया जा सकता है।

ग्राम गड़हरी, ग्राम पंचायत पडोरा, विकास खण्ड चरखारी, जनपद महोबा

''जल जीवन मिशन'' योजनांतर्गत ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना केन्द्र सरकार द्वारा वर्ष 2019 में प्रत्येक ग्रामीण परिवार को शुद्ध व नियमित पेयजल की उपलब्धता सुनिश्चित करने की संकल्पना के साथ संचालित किया गया था। योजना का

उद्देश्य जल संकट का समाधान प्रस्तुत करने के साथ ही ग्रामीण जीवन में बदलाव

लाना भी है। प्रस्तुत अध्ययन के अंतर्गत महोबा जनपद के चरखारी विकास खण्ड के ग्राम पंचायत पडोरा के अंतर्गत ग्राम गढ़हरी में ''जल जीवन मिशन'' योजना के अंतर्गत ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के प्रभाव को लोगों के जीवन स्तर पर देखा गया है। सर्वप्रथम अध्ययन हेतु गढ़हरी गांव की कुल जनसंख्या, गांव में कुल परिवारों की संख्या, कुल मतदाताओं की संख्या, जातीय विविधता, नल कनेक्शनों की संख्या, शक्ति संरचना, गांव में स्थित विद्यालयों की संख्या, आंगनबाड़ी तथा प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र की उपलब्धता, अर्थव्यवस्था का प्रकार, कृषि प्रणाली तथा अन्य महत्त्वपूर्ण जानकारियों को एकत्रित किया गया। गांव गढ़हरी के संदर्भ में समग्र जानकारी एकत्र करने के लिए सर्वप्रथम ग्राम प्रधानपति श्री विनय सिंह से परिचर्चा करके गढ़हरी ग्राम की सामाजिक–आर्थिक, शैक्षिक पृष्ठभूमि से संबंधित आंकड़ों को प्राप्त किया गया। गांव के हितधारकों जैसे– पंचायत सदस्यों, गांव में संचालित विद्यालय के प्रधानाध्यापक, रोजगार सेवक और गढ़हरी गांव के सामाजिक रूप से प्रतिष्ठित लोगों से चर्चा की गई। समग्र चर्चा से पता चला कि ग्राम गढ़हरी में एक प्राथमिक विद्यालय शासन द्वारा संचालित किया जा रहा है। प्राथमिक विद्यालय गढ़हरी में कुल 20 विद्यार्थी नामांकित हैं। विद्यालय नल संयोजन से संतृप्त हैं जिससे नियमित जलापूर्ति सुनिश्चित हो रही है। गढ़हरी ग्राम में एक आंगनबाड़ी केन्द्र संचालित हैं जिसकी सहायिका का नाम श्रीमती साधना देवी है। आंगनबाड़ी सहायिका से बच्चों एवं गर्भवती तथा स्तनपान कराने वाली माताओं के स्वास्थ्य एवं पोषाहार के संदर्भ में जानकारी एकत्र की गयी जो कि संतोषजनक पाया गया। गांव में स्वास्थ्य केन्द्र की उपलब्धता नहीं है।

गड़हरी गांव की कुल जनसंख्या–250 है एवं मतदाताओं की कुल संख्या–150 है तथा कुल परिवारों की संख्या–70 है जबकि गांव में कुल नल संयोजन की संख्या–60 है अर्थात 10 परिवार अभी भी नल संयोजन से वंचित हैं। गांव में आय का मुख्य स्त्रोत कृषि एवं मजदूरी है। गांव में लगभग 2000 बीघा जमीन खेती योग्य है लेकिन यह जमीन असिंचित है जिसके कारण जल गहन वाली फसलों का उत्पादन नहीं हो पाता है। गांव में अपेक्षाकृत दलहन का उत्पादन अधिक होता है। गड़हरी गांव में सड़कों का अभाव है, अधिकतर मकान कच्चे हैं। आवागमन की पर्याप्त सुविधा नहीं है, पक्की सड़कों का अभाव है। गांव के लोगों का जीवन स्तर अत्यंत पिछड़ा हुआ है। ध्यातव्य है कि गड़हरी गांव की सामाजिक–आर्थिक दशायें अत्यंत दयनीय अवस्था में हैं। ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से आच्छादित परिवारों को नियमित पेयजल की आपूर्ति की जा रही है।

नोट : *अध्ययन का उद्देश्य, उपकल्पना, प्रणाली तथा उपकरण पूर्व वर्णित विषय के अनुसार ही सुनिश्चित किया गया है।*

1.0 निदर्श निर्धारण

ग्राम गड़हरी की कुल आबादी लगभग 250 है। सहभागी मूल्यांकन हेतु प्रस्तुत अध्ययन में स्तरीकृत दैव निदर्शन का प्रयोग करते हुए समग्र के प्रत्येक प्रस्तर से 10 प्रतिशत लोगों का चुनाव गड़हरी गांव से किया गया है। प्रत्येक प्रस्तर पर 1/10 भाग को अध्ययन का आधार बनाया गया। इस प्रकार से कुल 250/10 = 25 लोगों को प्रस्तुत अध्ययन, जो कि अवलोकन एवं सहभागी मूल्यांकन पर आधारित है, में सम्मिलित

किया गया। अध्ययन में 18 वर्ष से ऊपर की स्त्रियों एवं पुरूषों को समानुपात (50:50 प्रतिशत) में सम्मिलित करके उनके जीवन स्तर पर ''जल जीवन मिशन'' के अंतर्गत संचालित परियोजना ''हर घर नल–हर घर जल'' के प्रभाव को देखा गया। प्रस्तुत अध्ययन में हितधारकों के रूप में गड़हरी के प्रधान एवं पंचायत सदस्यों से भी ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना के बहु–आयामी प्रभाव पर चर्चा की गई। ग्राम गड़हरी में संचालित प्राथमिक विद्यालय के प्रधानाध्यापक को भी प्रस्तुत अध्ययन में हितधारक के रूप में सम्मिलित करके योजना के प्रभाव से गांव में आये बदलावों को समझने का प्रयास किया गया। विद्यालय में नामांकित छात्र/छात्राओं को भी अध्ययन में सम्मिलित करके योजना संचालित होने के पश्चात् उनके जीवन–स्तर में आये बदलावों को जानने का प्रयास किया गया। गड़हरी गांव में संचालित आंगनबाड़ी केन्द्र की सहायिका को भी हितग्राहियों के रूप में सम्मिलित करके योजना के प्रभाव के संदर्भ में जानकारी प्राप्त की गई है।

अवलोकन एवं सहभागी मूल्यांकन हेतु अध्ययन में कुल 25 लोगों को न्यादर्श रूप में सम्मिलित किया गया है जिसमें से 12 पुरूष और 13 महिलायें हैं। न्यादर्श चयन में यह ध्यान रखा गया है कि कोई भी ऐसी इकाई चयनित ना हो, जो नल संयोजन से वंचित हो। इसके अतिरिक्त गांव के हितधारकों (स्टेकहोल्डर्स) को भी अध्ययन में सम्मिलित करके ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से लोगों के जीवन स्तर में आये बदलावों को जानने का प्रयास किया गया है।

2.0 समाविष्ट के मानदण्ड

ग्राम गढ़हरी विकास खण्ड चरखारी, जनपद महोबा में सरकार द्वारा संचालित योजना ''हर घर नल–हर घर जल'' के प्रभाव मूल्यांकन हेतु गढ़हरी ग्राम की सम्पूर्ण जनसंख्या का 1/10 भाग (25 न्यादर्श) और गांव के हितधारकों को अध्ययन में सम्मिलित किया गया है, जिसमें 18 वर्ष से ऊपर के स्त्री एवं पुरूष सम्मिलित हैं।

3.0 बहिष्करण के मानदण्ड

प्रस्तुत अध्ययन में गढ़हरी ग्राम में निवास ना करने वाले व्यक्तियों को न्यादर्श के रूप में सम्मिलित नहीं किया गया है। साथ ही जो व्यक्ति ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से आच्छादित एवं लाभार्थी नहीं है, उन्हें भी वर्णित अध्ययन में न्यादर्श के रूप में सम्मिलित होने से वंचित किया गया है। इसके अतिरिक्त ग्राम पंचायत काशीपुरा से असंबद्ध हितधारकों को भी अध्ययन में उत्तरदाताओं के रूप में सम्मिलित नहीं किया गया है।

4.0 अवलोकन एवं सहभागी मूल्यांकन के आधार पर प्राप्त परिणाम

अध्ययन में अवलोकन एवं सहभागी मूल्यांकन के आधार पर ग्राम गढ़हरी, विकास खण्ड चरखारी, जनपद महोबा में निवास करने वाली आबादी के सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक एवं स्वास्थ्य स्तर पर ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना के बहु–आयामी

प्रभावों का निष्पक्षता से अध्ययन किया गया है। गांव के लोगों के जीवन के विविध पक्षों पर वर्णित योजना के प्रभाव संबंधी परिणाम निम्नलिखित हैं–

4.1 सामाजिक परिवर्तन के संदर्भ में

प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श के रूप में सम्मिलित कुल 13 महिलाओं से ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना संचालित होने के पश्चात् उनके जीवन में आये परिवर्तन के संदर्भ में परिचर्चा किया गया। अध्ययन में 100 प्रतिशत महिला उत्तरदाताओं ने बताया कि उन्हें ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना संचालित होने के बाद से दूषित जल पीने से होने वाली बीमारियों से मुक्ति मिल गयी है। 98 प्रतिशत महिला उत्तरदाताओं ने कहा कि उनका स्वास्थ्य पूर्व की अपेक्षा बेहतर हुआ है। 95 प्रतिशत महिला न्यादर्शों ने स्वीकार

किया कि स्वास्थ्य स्तर में सुधार आने से वह पहले की अपेक्षा अधिक ऊर्जावान महसूस

करती हैं। जल संकट के कारण महिलाओं का अधिकांश समय जल संचयन पर ही चला जाता था जिससे अब छुटकारा मिल गया है। गड़हरी गांव के प्रत्येक घर में जलापूर्ति होने से महिलाओं का कार्य बोझ कम हुआ है। 96 प्रतिशत महिला उत्तरदाताओं ने बताया कि बच्चों की शिक्षा पर वह पूर्व की अपेक्षा अधिक ध्यान दे रही हैं। 92 प्रतिशत महिलाओं ने बताया कि समय व धन की बचत होने से वह पूंजी का निवेश आय अर्जन वाली गतिविधियों पर कर रही हैं। कृषि और पशुपालन में महिलाओं की भागीदारी बढ़ी है। रोजगारोन्मुख कार्यों में महिलाओं की भागीदारी बढ़ने के कारण परिवार में भी उनका सम्मान बढ़ा है। महिलाओं के अस्तित्त्व को परिवार में स्वीकार किया जा रहा है। सहभागी मूल्यांकन में अध्ययनकर्ता द्वारा पाया गया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने महिलाओं को सामाजिक–आर्थिक रूप से सशक्त करके आत्मनिर्भर एवं स्वावलंबी बनाने में महती भूमिका का निर्वहन् किया है।

4.2 शिक्षा की स्थिति में बदलाव

''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने गड़हरी गांव में शिक्षा के प्रति जागरूकता लाने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। अध्ययन में सम्मिलित 100 प्रतिशत न्यादर्शों ने बताया कि योजना द्वारा प्रत्येक परिवार को स्वच्छ पेयजल की आपूर्ति के कारण स्वास्थ्य स्तर में होने वाले सुधार ने शिक्षा के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय सुधार किया है। गावं में स्थित प्राथमिक विद्यालय में विद्यार्थियों के नामांकन संख्या में पूर्व की अपेक्षा वृद्धि हुयी है, विशेषकर बालिकाओं के। विद्यालय में नामांकित बच्चों से चर्चा करने पर पता चला

कि उन्हें विद्यालय में मूलभूत सुविधाओं की समुचित प्राप्ति हो रही है। बच्चों ने बताया कि विद्यालय में स्वच्छ पेयजल नियमित रूप से मिल रहा है और शौचालय की सुविधा भी प्रत्येक विद्यार्थी को उपलब्ध हो रही है। 98 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना लागू होने के बाद से बच्चों की शिक्षा में अधिक सुधार देखा गया है। 100 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार जल–जनित बीमारियों के कम होने से बच्चों के स्वास्थ्य में रूपांतरकारी बदलाव आये हैं जिसका सकारात्मक प्रभाव उनकी शिक्षा पर पड़ रहा है। जल संकट का समाधान होने से बालिकाओं की शिक्षा में अधिक

सुधार देखा गया। 90 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि पहले बहुत कम लड़कियां विद्यालय में पढ़ने जाती थी क्योंकि ना तो उनके पास समय रहता था और ना ही उनका

स्वास्थ्य ठीक रहता था और अभिभावक भी शिक्षा के प्रति उदासीन व्यवहार रखते थे। अब ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना संचालित होने के बाद से इस व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन आया है। अब प्रत्येक बच्चा/बच्ची नियमित रूप से विद्यालय जा रहे/रही हैं।

4.3 स्वास्थ्य संबंधी बदलाव

उत्तम स्वास्थ्य की प्राप्ति के लिए स्वच्छ पेयजल की भूमिका को नजरंदाज नहीं किया जा सकता है। इस संकल्पना को साकार करने के लिए ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना शासन द्वारा संचालित की जा रही है। प्रस्तुत सहभागी मूल्यांकन में न्यादर्श

रूप में सम्मिलित 100 प्रतिशत न्यादर्शों ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने जल संकट को समाप्त करने के साथ–साथ स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता भी सुनिश्चित किया है। प्रस्तुत अध्ययन में 97 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया कि उनका स्वास्थ्य स्तर पूर्व की अपेक्षा उन्नत हुआ है और उन्हें जल–जनित बीमारियों से लगभग मुक्ति मिल चुकी है। 100 प्रतिशत न्यादर्शों के अनुसार उन्हें अब डॉक्टर के पास इलाज हेतु अनावश्यक पैसे खर्च करने से छुटकारा मिल चुका है। 95 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि गांव में बने बंद पड़े शौचालय अब जलापूर्ति होने से प्रकार्यात्मक स्थिति में आ चुके हैं जिससे स्वच्छता में सुधार होने के साथ ही महिलाओं के सम्मान को भी संरक्षण मिला है। 100 प्रतिशत महिला उत्तरदाताओं ने बताया कि अब पेट दर्द संबंधी बीमारियां बहुत कम हो गयी हैं। 94 प्रतिशत न्यादर्शों के मतानुसार कर्ज जाल की समस्या से भी ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने राहत दिया है। अवलोकन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि वर्णित योजना ने गांव में निवासित सभी व्यक्ति जो नल संयोजन से आच्छादित हैं, उनके स्वास्थ्य स्तर में सुधार करके उनकी शारीरिक एवं मानसिक क्षमताओं को उन्नत किया है जिससे वह स्वयं को ऊर्जावान महसूस कर रहे हैं। योजना ने गांव के लोगों के जीवन को सुखद बनाया है।

4.4 सामाजिक व्यवहार में बदलाव

योजना संचालन से पूर्व गड़हरी गांव के कुछ अमीर लोगों तक ही शुद्ध पेयजल की पहुंच सुलभ थी। निम्न आय वर्ग के लोगों में स्वच्छ पेयजल पर वहन करने की

अक्षमता के कारण प्रायः दूषित जल से ही काम चलाना पड़ता था। इसका समस्या का समाधान ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के अंतर्गत प्रत्येक परिवार को स्वच्छ पेयजल की आपूर्ति सुनिश्चित करके किया गया। गड़करी गांव में जल संकट के कारण प्रायः भेदभाव देखा जाता था, जो कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा नियमित पेयजल की आपूर्ति से समाप्त हो गया है। 100 प्रतिशत न्यादर्शों ने बताया कि जल

संकट के समाधान के साथ ही भेदभाव को भी ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने समाप्त कर दिया है। 96 प्रतिशत न्यादर्शों के अनुसार योजना ने जल संकट से उत्पन्न तनाव को समाप्त करके गांव में शांति एवं खुशहाली को जन्म दिया है। इस प्रकार गांव में सहकार एवं सहयोग की भावना को बल मिला है। न्यादर्श में सम्मिलित 92 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि योजना लागू होने के बाद आधुनिक मूल्यों के समावेश ने बाल–विवाह जैसी कुरीतियों को सीमित किया है। शादी–विवाह जैसे अवसरों पर लोगों

द्वारा अधिक खर्च किया जा रहा है। गांव की छवि में योजना द्वारा सुधार आने से वैवाहिक संबध बढ़े हैं। अतएव यह कह सकते हैं कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा गड़हरी गांव में सामाजिक गतिशीलता को प्रोत्साहन मिला है जिससे लोगों की सोच में सकारात्मक परिवर्तन दृष्टिगोचर हो रहा है।

4.5 रोजगार के अवसर

ग्राम गड़हरी में कृषि योग्य भूमि तो पर्याप्त है लेकिन असिंचित होने के कारण उत्पादन प्रभावित होता है। गांव के लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि एवं मजदूरी है। कुछ लोग शहरों में जाकर मजदूरी आदि कार्यों को करके जीवन यापन कर रहे हैं, तो कुछ गांव में ही रहकर किसी तरह गुजारा कर रहे हैं। ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा गांव के कुछ परिवारों को छोड़कर लगभग सभी परिवारों को स्वच्छ पेयजल की आपूर्ति की जा रही है जिससे गांव की छवि में सकारात्मक परिवर्तन हुआ है। युवाओं का शहरों से मोह भंग हुआ है क्योंकि वहां पर उन्हें निम्न स्तर का जीवन निर्वाह करना पड़ता है और कार्य की दशायें भी स्वास्थ्य के प्रतिकूल होती हैं, इन सबके बावजूद उन्हें वेतन बहुत कम मिलता है। गांव में मूलभूत सुविधाओं के मिलने से अब युवाओं में अपने गांव के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति का विकास हुआ है और वह गांव से ही जुड़कर रहना पसंद कर रहे हैं और यहीं पर छोटा–मोटा रोजगार करने के लिए उत्सुक हैं। युवाओं में आत्मविश्वास देखा जा सकता है। 96 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना संचालित होने से महिलाओं का रूझान हस्त–शिल्प और पशुपालन की

ओर बढ़ा है, जबकि युवाओं में पलायन दर में कमी आयी है। वर्णित योजना ने युवाओं को सशक्त एवं आत्मनिर्भर बनाकर प्रगति का मार्ग प्रशस्त किया है। रोजगार के विकल्पों के बढ़ने से युवाओं में संतोष का भाव जागृत हुआ है।

''जल जीवन मिशन'' के अंतर्गत संचालित ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना गड़हरी गांव में अपने ध्येय को प्राप्त करने में सफल रही है जिसकी पुष्टि प्रस्तुत सहभागी मूल्यांकन द्वारा प्राप्त आंकड़ों से किया जा सकता है। योजना द्वारा गांव में अनेक बदलाव परिलक्षित हुये हैं जिसके कारण गांव की जनता में संतुष्टि का भाव विकसित हुआ है। ध्यातव्य है कि गड़हरी गांव में जल का व्यापक स्तर पर अपव्यय हो रहा है जिसे बचाने हेतु ग्रामीण लोगों में जागरूकता लाने की आवश्यकता है। योजना से आपूर्ति होने वाले जल को शुद्ध करने के लिए मिलाये जाने वाले ब्लीचिंग पाउडर, क्लोरीन आदि से महक आने के कारण गांव के कुछ लोग जल का सेवन पेयजल के रूप में नहीं कर रहे हैं क्योंकि उन्हें लगता है कि यह उन्हें बीमार कर सकता है। इस धारणा को समाप्त करने के लिए आवश्यक है कि गांव में जागरूकता कार्यक्रम संचालित किये जायें और उन्हें स्वच्छ पेयजल की महत्ता को बताया जाये और आपूर्ति होने वाले जल के प्रति गलत धारणा को परिवर्तित किया जाये।

ग्राम रिहुनियां, ग्राम पंचायत पुपवारा, विकास खण्ड चरखारी, जनपद महोबा

''जल जीवन मिशन'' के ''हर घर नल–हर घर जल'' कार्यक्रम के अंतर्गत ग्राम पंचायत पुपवारा, विकास खण्ड चरखारी, जनपद महोबा के अंतर्गत आने वाले गांव रिहुनियाँ का अध्ययन किया गया है। इसके अंतर्गत सर्वप्रथम गांव की जनसंख्या, गांव

में कुल परिवारों की संख्या, जातीय समीकरण, परिवारों को प्राप्त नल संयोजनों की संख्या, शक्ति संरचना, प्राथमिक विद्यालयों की संख्या, पूर्व–माध्यमिक विद्यालय, आंगनबाड़ी तथा प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र के संदर्भ में जानकारी प्राप्त की गयी। शक्ति संरचना में सर्वप्रथम ग्राम प्रधान श्री श्यामकरन कुशवाहा से गांव की समग्रता के संदर्भ में परिचर्चा

किया गया। इसके साथ ही पंचायत सदस्यों (11) से भी चर्चा करके रिहुनियाँ गांव के संदर्भ में मूलभूत जानकारी प्राप्त किया गया। रिहुनियाँ गांव में शासन द्वारा संचालित प्राथमिक विद्यालय की प्रधानाध्यापिका श्रीमती मेहरून्निसा एवं शिक्षकों से वार्ता करके विद्यालय में छात्र/छात्राओं के नामांकन, मूलभूत सुविधाओं एवं जल संयोजन संबंधी जानकारी प्राप्त की गई। विद्यालय में कुल नामांकन–61 है। प्रधानाध्यापिका से प्राप्त जानकारी के अनुसार विद्यालय में ड्राप आउट की समस्या देखने को नहीं मिली। विद्यालय में ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से स्वच्छ पेयजल की आपूर्ति नियमित रूप से हो रही है। गांव में संचालित आंगनबाड़ी की सहायिका श्रीमती रीता सिंह से भी बच्चों के पोषाहार, टीकाकरण एवं स्वास्थ्य के संबंध में जानकारी प्राप्त किया गया। गांव में स्वास्थ्य केन्द्र की अनुपलब्धता पायी गयी। प्राप्त जानकारी के अनुसार गांव की कुल आबादी–800 है जिसमें कुल मतदाताओं की संख्या–450 एवं परिवारों की संख्या–130 है। गांव रिहुनियाँ में कुशवाहा जाति के लोगों की संख्या सर्वाधिक है, उसके बाद ठाकुर एवं यादव जाति के लोग हैं। गांव के लोगों की आय का मुख्य स्त्रोत कृषि है। गांव में कुल कृषि योग्य भूमि लगभग 600 बीघा है लेकिन असिंचित होने के कारण जल गहन फसलों का उत्पादन नहीं हो पाता है। कृषि के अतिरिक्त आय का दूसरा मुख्य स्त्रोत दिहाड़ी–मजदूरी है जिसके लिए अधिकतर लोग दिल्ली और मुंबई जैसे महानगरों में गये हैं। प्राप्त जानकारी के अनुसार लगभग 50 प्रतिशत युवा दिहाड़ी–मजदूरी के वास्ते गांव से पलायन करके शहरों/महानगरों में चले गये हैं। ग्राम रिहुनियाँ में कुल नल संयोजन

की संख्या–130 है। गांव के प्रत्येक परिवार को नल संयोजन से संतृप्त कर दिया गया है जिससे प्रत्येक परिवार को शुद्ध पेयजल की नियमित आपूर्ति हो रही है।

नोट *: अध्ययन का उद्देश्य, उपकल्पना, प्रणाली तथा उपकरण पूर्व वर्णित विषय के अनुसार ही सुनिश्चित किया गया है।*

1.0 निदर्श निर्धारण

पुपवारा ग्राम पंचायत के ग्राम रिहुनियां की कुल जनसंख्या लगभग 800 है। कुल परिवारों की संख्या–130 एवं नल संयोजनों की संख्या भी 130 है। गांव में बहुसंख्यक आबादी कुशवाहा जाति की है, उसके बाद ठाकुर एवं यादव जाति के लोग हैं। अवलोकन एवं सहभागी मूल्यांकन पर आधारित प्रस्तुत शोध में स्तरीकृत दैव निदर्शन का प्रयोग करके प्रत्येक प्रस्तर से 10 प्रतिशत लोगों का चयन न्यादर्श के रूप में अध्ययन के लिए किया गया है। इस प्रकार से गांव की कुल जनसंख्या से अलग–अलग जातियों को वर्गीकृत करते हुये समानुपात में प्रत्येक जाति से 1/10 भाग को अध्ययन में न्यादर्श रूप में सम्मिलित किया गया। कुल 800/10 = 80 न्यादर्शों, जिसमें 18 वर्ष से ऊपर के स्त्री एवं पुरुष सम्मिलित हैं, बात करके उनके जीवन स्तर पर ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से आये बदलावों को जानने का प्रयास किया गया।

इसके अतिरिक्त वर्णित अध्ययन में ग्राम रिहुनियां के हितधारकों जिसमें ग्राम प्रधान श्री श्यामकरन कुशवाहा एवं ग्राम पंचायत के 11 सदस्यों से योजना संचालन के बाद लोगों के जीवन स्तर में आये बदलावों के संदर्भ में परिचर्चा किया गया। ग्राम में संचालित

प्राथमिक विद्यालय की प्रधानाध्यापिका श्रीमती मेहरून्निसा एवं शिक्षकों तथा विद्यालय में नामांकित छात्र/छात्राओं से भी ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के पश्चात् आये परिवर्तन के संदर्भ में चर्चा किया गया। गांव में आंगनबाड़ी केन्द्र की सहायिका को भी हितधारकों के रूप में सम्मिलित करके ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से बच्चों एवं माताओं के स्वास्थ्य स्तर में आने वाले बदलावों के संदर्भ वार्ता किया गया। रिहुनियां ग्राम के सामाजिक रूप से प्रतिष्ठित एवं स्वीकृत लोगों को भी हितधारकों के रूप में सम्मिलित करके आवश्यक जानकारियां प्राप्त की गयी। इस प्रकार से प्रस्तुत अध्ययन में कुल 80 न्यादर्शों जिसमें 40 महिला एवं 40 पुरूष हैं तथा गांव के हितधारकों को सम्मिलित किया गया है।

2.0 समाविष्ट के मानदण्ड

ग्राम रिहुनियां, विकास खण्ड चरखारी, जनपद महोबा में सरकार द्वारा संचालित योजना ''हर घर नल–हर घर जल'' के प्रभाव मूल्यांकन हेतु रिहुनियां ग्राम की सम्पूर्ण जनसंख्या (800) का 1/10 भाग (80 न्यादर्श) और गांव के हितधारकों को अध्ययन में सम्मिलित किया गया है, जिसमें 18 वर्ष से ऊपर के स्त्री एवं पुरूष सम्मिलित हैं।

3.0 बहिष्करण के मानदण्ड

प्रस्तुत अध्ययन में रिहुनियां ग्राम से असंबद्ध व्यक्ति को न्यादर्श एवं हितधारकों के रूप में सम्मिलित नहीं किया गया है।

4.0 परिणाम एवं चर्चा

''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा रिहुनियां गांव के स्थायी निवासियों की शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, सामाजिक व्यवहार एवं महिलाओं की प्रस्थिति में आये परिवर्तन का अवलोकन एवं सहभागी मूल्यांकन के आधार पर अध्ययन किया गया है। वर्णित योजना ने गावं के लोगों को व्यापक स्तर पर प्रभावित किया है। प्रस्तुत अध्ययन से प्राप्त परिणाम इस प्रकार है–

4.1 सामाजिक परिवर्तन के संदर्भ में

प्रस्तुत अध्ययन में सम्मिलित कुल 40 महिला न्यादर्शों से ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना संचालित होने के पश्चात् महिलाओं के जीवन में आये परिवर्तन संबंधी जानकारी एकत्रित की गयी है। 96 प्रतिशत न्यादर्शों ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने उनके चहुंमुखी विकास को उत्प्रेरित किया है। 100 प्रतिशत महिला न्यादर्शों ने स्वीकार किया कि वर्णित योजना के संचालन से महिलाओं का सामाजिक–आर्थिक विकास हुआ है। 100 प्रतिशत महिला उत्तरदाताओं के अनुसार स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता से जल जनित बीमारियों में कमी आने से उनके स्वास्थ्य स्तर में सुधार आया है। 96 प्रतिशत महिला न्यादर्शों के अनुसार पेट संबंधी अनेक प्रकार की बीमारियों से उन्हें मुक्ति मिल गयी है। 91 प्रतिशत महिला न्यादर्शों के अनुसार समय व धन की बचत से श्रम बल में महिलाओं की भागीदारी बढ़ी है। सहभागी मूल्यांकन में पाया गया कि योजना संचालित होने के बाद पर्याप्त समय मिलने के कारण बच्चों की शिक्षा

पर भी महिलाओं द्वारा समुचित ध्यान दिया जा रहा है। महिलाओं के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य में गुणात्मक परिवर्तन आने से उनकी सोच में भी आधुनिक मूल्यों का

समावेश हुआ है। न्यादर्श में सम्मिलित महिलाओं ने बताया कि अब वह परिवार की देखभाल हेतु पर्याप्त समय दे रही हैं। धन की बचत होने से छोटे–मोटे कार्यों में महिलायें पूंजी निवेश करने में सक्षम हुयी हैं जिससे उन्हें आय की प्राप्ति हो रही है। ध्यातव्य है कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने महिलाओं के जीवन में उल्लेखनीय सुधार किया है।

4.2 शिक्षा की स्थिति में बदलाव

''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने महिलाओं की दशा में सुधार करने के साथ ही ग्राम रिहुनियां की साक्षरता दर में भी सुधार करने में सफलता पूर्वक अपनी भूमिका का निर्वहन किया है। 100 प्रतिशत न्यादर्शों ने बताया कि गांव में स्थित प्राथमिक

विद्यालय में स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता से मूलभूत सुविधाओं में वृद्धि हुयी। वर्णित योजना के संचालन के पूर्व विद्यालय में शौचालय के कार्यात्मक ना होने के कारण बच्चियों को नियमित रूप से विद्यालय नहीं भेजा जाता था क्योंकि उन्हें शौच हेतु खुले में बाहर जाना पड़ता था जिससे अनहोनी की आशंका बनी रहती थी। ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से विद्यालय को नियमित रूप से पेयजल की आपूर्ति की जा रही है जिससे

शौचालय भी कार्यात्मक हो गये हैं, इसलिए बच्चियों एवं बच्चों को नियमित रूप से विद्यालय भेजा जा रहा है। विद्यालय में विद्यार्थियों की उपस्थिति बढ़ने से शिक्षक भी अध्यापन कार्य पर जोर दे रहे हैं। स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता से बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार परिलक्षित हो रहा है जिसके कारण अध्ययन में उनकी रूचि बढ़ी है। 94 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि घर में भी बच्चों की शिक्षा पर पर्याप्त ध्यान दिया जा रहा है। 96 प्रतिशत न्यादर्शों ने स्वीकार किया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने शिक्षा के प्रति जागरूकता उत्पन्न किया है। जागरूकता उत्पन्न होने से विद्यालय में नामांकन दर में वृद्धि देखी गयी है। प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों से परिचर्चा पर पता चला कि विद्यालय में ड्राप आउट की समस्या पूर्व की अपेक्षा बहुत कम हो गयी है। प्रधानाध्यापिका ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना लागू के पूर्व बहुत कम बच्चे किसी भी विद्यालय में पढ़ने जाते थे, क्योंकि निजी विद्यालय घर से बहुत दूर था और इन विद्यालयों की पढ़ाई बहुत मंहगी है। गांव के विद्यालय में बच्चे इसलिए पढ़ने नहीं आते थे क्योंकि यहां पर मूलभूत सुविधाओं का अभाव था। चूंकि अब विद्यालय में सभी सुविधायें उपलब्ध हैं, इसलिए छात्र/छात्राओं का नामांकन एवं उपस्थिति बढ़ी है।

4.3 स्वास्थ्य संबंधी बदलाव

न्यादर्श में सम्मिलित लोगों से चर्चा करने पर पता चला कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा जल जनित एवं अन्य बीमारियों से सुरक्षा प्राप्त हुई है। 100 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया कि उनका स्वास्थ्य पूर्व की अपेक्षा बेहतर हुआ है। 100 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया कि दूषित जल पीने से उन्हें मुक्ति मिल

गयी है। अवलोकन से पता चलता है कि सभी आयु वर्ग के लोगों के स्वास्थ्य स्तर में उत्तरोत्तर सुधार आया है, उनकी शारीरिक कमजोरी दूर हुई है, मानसिक स्थिति में भी सुधार आया है। 100 प्रतिशत न्यादर्शों ने कहा कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना लागू होने के पश्चात् डॉक्टर से इलाज कराने पर होने वाले खर्च में बचत हुई है जिससे कर्ज लेने की समस्या से भी काफी हद तक उन्मुक्ति मिली है। महिलाओं के स्वास्थ्य स्तर में सुधार आने से उनके सशक्तिकरण को भी प्रोत्साहन मिला है। 95 प्रतिशत न्यादर्शों ने स्वीकार किया कि योजना से प्राप्त स्वच्छ जल से पेट साफ रहता है और भोजन भी ठीक से पच जाता है। 98 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि स्वास्थ्य संबंधी

खर्च में कमी आने से बचने वाले पैसे का निवेश बच्चों की पढ़ाई–लिखाई एवं खेती–बाड़ी

के कार्यों में लगाकर लाभ कमा रहे हैं। अतएव यह कहना समीचीन होगा कि शारीरिक बीमारियों से मुक्ति के साथ ही मानसिक संतुष्टि का भाव भी लोगों में दृष्टिगोचर हो रहा है।

4.4 सामाजिक व्यवहार में बदलाव

न्यादर्श में सम्मिलित 100 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार गांव का प्रत्येक घर

''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से संतृप्त है और प्रत्येक परिवार को शुद्ध पेयजल की आपूर्ति नियमित रूप से हो रही है। 98 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि योजना संचालित होने के पूर्व गांव के केवल अमीर लोगों को ही स्वच्छ पेयजल उपलब्ध था और एक बड़ा तबका इससे वंचित था जिससे उन्हें अनेक प्रकार की बीमारियों से जूझना पड़ता था। ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने उक्त समस्या का समाधान प्रस्तुत कर दिया है। अब प्रत्येक परिवार को स्वच्छ पेयजल उपलब्ध हो रहा है। ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने जल संकट का समाधान प्रस्तुत करने के साथ ही जल के लिए होने वाले लड़ाई–झगड़ों पर भी विराम लगाया है। रिहुनियां ग्राम में सामाजिक समरसता को योजना द्वारा प्रोत्साहन मिला है। लोगों में एकता की भावना सुदृढ़ हुई है। न्यादर्श में सम्मिलित 72 प्रतिशत लोगों ने शादी–विवाह के संबंध में ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के प्रभाव से अनभिज्ञता प्रकट की, लेकिन सहभागी मूल्यांकन से प्राप्त जानकारी से यह स्पष्ट हुआ कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा लोगों की सोच में आधुनिक मूल्यों का प्रसार हुआ है जिसका सकारात्मक प्रभाव बाल विवाह एवं बेमेल विवाह पर भी देखा जा सकता है। गांव में बाल विवाह में कमी आयी है।

4.5 रोजगार के अवसर

रिहुनियां गांव के लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि है और दूसरा मुख्य व्यवसाय मजदूरी है। गांव के कई लोग ईंट–भट्ठों पर दिहाड़ी–मजदूरी करते हैं। लगभग 50 प्रतिशत युवा बाहर शहरों में रहकर मजदूरी आदि कार्य करके जीवकोपार्जन कर रहे हैं। ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा युवाओं में अपने गांव के प्रति सकारात्मक छवि

का विकास हुआ है। युवा लोगों का रूझान गांव में ही रहकर कृषि और पशुपालन, डेयरी, मत्स्य पालन, कुक्कुट पालन जैसे रोजगारोन्मुखी कार्यों की ओर हुआ है जिससे पलायन कि समस्या को कुछ हद तक कम करने में सफलता मिली है। महिलाओं की भूमिका छोटे–मोटे कार्यों में बढ़ी है। हस्त शिल्प, सिलाई, कढ़ाई, खेती–बाड़ी, पशुपालन आदि में महिलाओं की भूमिका उल्लेखनीय रूप से बढ़ी है। न्यादर्श में सम्मिलित 95 प्रतिशत लोगों ने बताया कि युवाओं में पलायन कम हुआ है क्योंकि अब लगभग सभी सुविधायें गांव में मिल रही हैं जो केवल शहरों में मिलती थी। युवाओं से चर्चा करने पर पता चला

कि शहरों में भी दिहाड़ी–मजदूरी करना पड़ता है और गांव में भी, इसलिए वह गांव में ही रहकर जीवकोपार्जन करेंगे।

ध्यातव्य है कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने रिहुनियां ग्राम में समग्र परिवर्तन को प्रोत्साहित किया है। वर्णित योजना जिस उद्देश्य की पूर्ति हेतु संचालित की जा रही है उसकी प्राप्ति की पुष्टि रिहुनियां ग्राम के अध्ययन से प्राप्त तथ्य करते हैं। राज्य पेयजल एवं स्वच्छता मिशन द्वारा संचालित योजना ''जल जीवन मिशन'' के अंतर्गत संचालित परियोजना ''हर घर नल–हर घर जल'' द्वारा स्वास्थ्य, शिक्षा, रोजगार आदि क्षेत्रों में रूपांतरकारी बदलाव दृष्टिगोचर हो रहे हैं। गौरतलब है कि रिहुनियां ग्राम के लोगों को पेयजल के प्रति संवेदनशील बनाने की जरूरत है क्योंकि अध्ययनकर्ता द्वारा अवलोकन में पाया गया कि गांव में पेयजल का अत्यधिक अपव्यय किया जा रहा है जिसकी पुष्टि गांव की नालियों से लगातार बहने वाले जल से होता है। गांव के लोगों में एक धारणा यह भी बनी हुयी है कि आपूर्ति होने वाले पेयजल में महक आती है जिसके कारण वह इसका उपयोग पीने हेतु बहुत कम कर रहे हैं क्योंकि उन्हें डर है कि उनका स्वास्थ्य स्तर खराब हो सकता है। अधिकतर लोग योजना से आपूर्ति किये जाने वाले जल का उपयोग जानवरों को पिलाने, नहलाने–धुलाने, कपड़े धोने आदि कार्यों में ही कर रहे हैं। आपरेटर से चर्चा करने पर पता चला कि पेयजल को शुद्ध करने के लिए क्लोरीन, ब्लीचिंग पाउडर जैसी चीजों को मिलाया जाता है जिसके कारण महक आती है। स्वास्थ्य पर इसका कोई भी दुष्प्रभाव नहीं है, फिर भी गांव के लोगों द्वारा इसके प्रति नकारात्मक धारणा बना लिया गया है। यहां पर यह सुझाव दिया जाना उपयुक्त होगा कि गांव के लोगों में जागरूकता लाने की आवश्कता है। इसके लिए गैर–सरकारी संगठनों का सहयोग लिया जा सकता है। ग्रामीण लोगों में जागरूकता लाकर ही ''हर घर नल–हर

घर जल'' योजना के लक्ष्यों को पूर्ण रूप से प्राप्त किया जा सकता है। ध्यातव्य है कि गांव में वर्णित योजना द्वारा उल्लेखनीय कार्य किये जा रहें हैं लेकिन उक्त कुछ कमियों को सुधार कर इसे और प्रभावी बनाया जा सकता है।

ग्राम इमलीखेड़ा, ग्राम पंचायत नौसारा, विकास खण्ड चरखारी, जनपद महोबा

प्रस्तुत अध्ययन में ''जल जीवन मिशन'' के अंतर्गत संचालित ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना के परिणामस्वरूप ग्राम इमलीखेड़ा, ग्राम पंचायत नौसारा, विकास

खण्ड चखरारी, जनपद महोबा में निवासित आबादी के जीवन–स्तर में आये बदवालों का मूल्यांकन किया गया है। अध्ययन हेतु अवलोकन एवं सहभागी मूल्यांकन प्रणाली/विधियों का प्रयोग करते हुए अपेक्षित आंकड़ों को प्राप्त करके निष्कर्ष निकाले गये हैं। इसके

अंतर्गत सर्वप्रथम गांव की जनसंख्या, गांव में परिवारों की संख्या, जातीय समीकरण, परिवारों को प्राप्त जल संयोजनों की संख्या, शक्ति संरचना, प्राथमिक विद्यालयों की संख्या, पूर्व–माध्यमिक विद्यालय, आंगनबाड़ी तथा प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र के संदर्भ में जानकारी प्राप्त की गयी। शक्ति संरचना में सर्वप्रथम ग्राम प्रधान श्रीमती चन्दी देवी से गांव की समग्रता के संदर्भ में बात की गयी। ग्राम पंचायत के सदस्यों से भी बात करके गांव की मूलभूत समस्याओं के संदर्भ में जानकारी प्राप्त की गयी। इसके अतिरिक्त ग्राम में संचालित विद्यालय के प्रधानाध्यापक एवं शिक्षकों से बातचीत कर विद्यालय में छात्र/छात्राओं के नामांकन, मूलभूत सुविधाओं, नल संयोजन आदि की जानकारी प्राप्त की गई।

इमलीखेड़ा गांव में एक प्राथमिक विद्यालय सरकार द्वारा संचालित किया जा रहा है जिसकी प्रधानाध्यापिका श्रीमती प्रियंका देवी हैं। विद्यालय में 02 सहायक शिक्षक एवं 03 शिक्षा मित्र नियुक्त हैं। विद्यालय में छात्र/छात्राओं का कुल नामांकन–51 है। विद्यालय में नल संयोजन से पेयजल की आपूर्ति अभी भी नहीं हो रही है। इमलीखेड़ा ग्राम में एक आंगनबाड़ी केन्द्र संचालित है जिसकी सहायिका का नाम श्रीमती ममता देवी है। आंगनबाड़ी की सहायिका से बात कर बच्चों तथा शिशुओं एवं माताओं के पोषाहार, स्वास्थ्य तथा टीकाकरण आदि की जानकारी प्राप्त की गयी। नौसारा ग्राम पंचायत में एक प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र संचालित है जो कि गांव से कुछ ही दूरी पर स्थित है क्योंकि इमलीखेड़ा गांव नौसारा ग्राम पंचायत के अंतर्गत ही आता है। इसलिए इमलीखेड़ा गांव के लोग स्वास्थ्य लाभ हेतु नौसारा में स्थित स्वास्थ्य केन्द्र में इलाज हेतु जाते हैं।

इमलीखेड़ा ग्राम की कुल आबादी–600 है एवं मतदाताओं की संख्या–180 है। ग्राम में कुल परिवारों की संख्या–25 है। गांव में कुल नल संयोजन का लक्ष्य–142 है जबकि 35 नल कनेक्शन अभी तक दिये जा चुके हैं। यद्यपि कि गांव में सभी 25 परिवारों को ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से संतृप्त किया जा चुका है। इमलीखेड़ा ग्राम में जमीन का कुल रकबा 300 बीघा है। लोगों की आय का मुख्य स्त्रोत कृषि है।

नोट : *अध्ययन का उद्देश्य, उपकल्पना, प्रणाली तथा उपकरण पूर्व वर्णित विषय के अनुसार ही सुनिश्चित किया गया है।*

1.0 निदर्श निर्धारण

इमलीखेड़ा की कुल जनसंख्या–600 है। निदर्श निर्धारण हेतु स्तरीकृत दैव निदर्शन विधि का प्रयोग किया गया है। ग्राम इमलीखेड़ा की कुल जनसंख्या के 1/10 वें भाग को प्रत्येक प्रस्तर से अध्ययन में सम्मिलित किया गया है (600/10 = 60)। इस प्रकार प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श के रूप में कुल 60 लोगों (महिला और पुरूष) को, जो कि इमलीखेड़ा ग्राम के निवासी हैं, सम्मिलित करके योजना के प्रभाव को जाना गया। साथ ही योजना के प्रभाव के संदर्भ में ग्राम इमलीखेड़ा के हितधारकों से भी चर्चा की गयी है।

2.0 समाविष्ट के मानदण्ड

ग्राम इमलीखेड़ा में सरकार द्वारा संचालित योजना ''हर घर नल–हर घर जल'' के प्रभाव मूल्यांकन हेतु ग्राम की सम्पूर्ण जनसंख्या का 1/10 वें भाग के साथ ही ग्राम

के हितधारकों को भी अध्ययन का आधार बनाया गया, जिसमें वयस्क स्त्री, पुरूष और वृद्ध सम्मिलित हैं।

3.0 बहिष्करण के मानदण्ड

प्रस्तुत अध्ययन में किसी–भी ऐसे व्यक्ति को सम्मिलित नहीं किया गया है, जो ग्राम इमलीखेड़ा से सम्बद्ध और वर्णित योजना का लाभार्थी नहीं था।

4.0 परिणाम एवं चर्चा

''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने लोगों के जीवन के विविध पक्षों को प्रभावित कर सकारात्मक बदलावों को लाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया है। प्रस्तुत अध्ययन में ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा कृत कार्य से इमलीखेड़ा गांव के लोगों में आये बदलावों का वर्णन किया गया है जो निम्नलिखित है–

4.1 सामाजिक परिवर्तन के संदर्भ में

अध्ययन में कुल 60 न्यादर्श सम्मिलित किये गये हैं जिनमें से महिलाओं की संख्या–30 (50 प्रतिशत) है। न्यादर्श में सम्मिलित महिला उत्तरदाताओं से ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना संचालित होने के बाद आये परिवर्तनों के संदर्भ में चर्चा करने पर 100 प्रतिशत महिला उत्तरदाताओं ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने उनके स्वास्थ्य स्तर में सुधार करके सम्मानजनक जीवन स्तर प्रदान किया है। 96 प्रतिशत महिला उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया कि योजना ने उनके कार्य बोझ को कम

किया है जिससे वह परिवार को अधिक समय दे पा रही हैं। 100 प्रतिशत महिलाओं ने बताया कि दूषित जल पीने से मुक्ति के कारण पेट संबंधी बीमारियां कम हुयी हैं। 95 प्रतिशत महिलाओं ने बताया कि अब वह मानसिक तनाव से काफी हद तक मुक्त हो चुकी हैं। न्यादर्श में सम्मिलित महिला उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया कि उनका जीवन स्तर उच्च हुआ है। 100 प्रतिशत ने बताया कि समय एवं धन की बचत होने से वह अपनी आवश्यकता की चीजों को खरीदने में सक्षम हुयी हैं। 98 प्रतिशत महिला न्यादर्शों

ने बताया कि अब वह बच्चों एवं परिवार की देखभाल पर पूर्व की अपेक्षा अधिक समय दे पा रही हैं। 85 प्रतिशत महिला न्यादशों ने बताया कि अब वह रोजगार करने की इच्छुक हैं। इस प्रकार से कहा जा सकता है कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना

ने महिलाओं की सामाजिक प्रस्थिति में अनुकरणीय बदलाव किया है जिससे उनका सम्मान परिवार व समाज में बढ़ा है। अवलोकन से स्पष्ट है कि अब महिलायें बच्चों की शिक्षा पर भी पर्याप्त ध्यान दे रही हैं। अतः स्पष्ट है कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने महिलाओं को सशक्त करके स्वावलंबी एवं स्वाभिमान पूर्वक जीवन जीने का अवसर प्रदान किया

4.2 शिक्षा की स्थिति में बदलाव

इमलीखेड़ा ग्राम के न्यादर्शों से चर्चा करने पर पता चला कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के संचालन से ग्राम इमलीखेड़ा में शिक्षा के क्षेत्र में वृहद स्तर पर

सुधार हुये हैं। 98 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि गांव में शिक्षा के प्रति जागरूकता आयी है जिसके कारण बच्चे नियमित रूप से विद्यालय जा रहे हैं और अभिभावक भी उन्हें समय से तैयार करके विद्यालय भेज रहे हैं। इमलीखेड़ा गांव में संचालित प्राथमिक विद्यालय में अभी भी योजना से जल की आपूर्ति नहीं हो रही है जिसके कारण बच्चे थोड़ा सा संकोच विद्यालय जाने में कर रहे हैं, फिर भी शैक्षिक जागरूकता के कारण बच्चों के नामांकन एवं नियमित उपस्थिति में सुधार आया है। विद्यालय की प्रधानाध्यापिका के अनुसार शीघ्र ही विद्यालय में जलापूर्ति हो जायेगी और बच्चों को स्वच्छ पेयजल उपलब्ध हो जायेगा, यद्यपि कि अभी भी विद्यालय में उपलब्ध नल से शुद्ध पेयजल बच्चों को प्राप्त हो रहा है। 96 प्रतिशत न्यदर्शों के अनुसार बालिकाओं को भी नियमित रूप से विद्यालय अध्ययन हेतु भेजा जा रहा है, अब उन्हें घरेलू कार्यों में व्यस्त रखकर शिक्षा से वंचित नहीं किया जा रहा है। इससे बालिकाओं की साक्षरता दर में भी सुधार आया है। प्रधानाध्यापिका ने बताया कि बच्चों की बोध क्षमता में योजना संचालित होने के बाद से सुधार आया है क्योंकि उनकी शारीरिक एवं मानसिक स्थिति में स्वच्छ पेयजल से सुधार आया है।

अवलोकन से स्पष्ट है कि अभिभावक बच्चों की शैक्षिक आवश्कताओं को समझ रहे हैं और वह बच्चों की शैक्षिक गतिविधियों के प्रति सजग हैं एवं अध्यापकों के संपर्क में रहकर बच्चों की शैक्षिक प्रगति से अवगत हो रहे हैं। अतएव यह कहना समीचीन होगा कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने अन्ततः इमलीखेड़ा गांव में साक्षरता दर में सुधार करने के साथ ही शिक्षा के महत्त्व को भी स्थापित किया है।

4.3 स्वास्थ्य संबंधी बदलाव

अध्ययन में सम्मिलित 96 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के संचालन के बाद से जल जनित एवं पेट संबंधी बीमारियों में

अत्यधिक कमी आयी है। 100 प्रतिशत न्यादर्शों ने बताया कि उनका स्वास्थ्य स्तर पूर्व की अपेक्षा सुधरा है और वह स्वयं को ऊर्जावान महसूस कर रहे हैं। हितधारकों से हुई परिचर्चा के आधार पर कहा जा सकता है कि योजना ने गांव के लोगों के स्वास्थ्य स्तर

में सुधार करके इलाज पर खर्च होने वाले पैसे को भी बचाया है साथ ही लोगों में सकारात्मक सोच को भी उक्त योजना ने विकसित किया है। हितधारकों ने यह भी बताया कि बच्चों एवं महिलाओं के स्वास्थ्य में अधिक सुधार परिलक्षित हुआ है। न्यादर्श में सम्मिलित 94 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि इलाज हेतु कर्ज जाल में फसने से मुक्ति मिल गयी है। 100 प्रतिशत न्यादर्शों के अनुसार अब डॉक्टर को उन्हें अनावश्यक पैसे देने की जरूरत नहीं है। इस प्रकार से ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना इमलीखेड़ा ग्राम में खुशहाली का प्रतीक बनी हुई है, क्योंकि लोगों के स्वास्थ्य स्तर में आये सुधार ने उन्हें खुशहाल जीवन जीने का सुअवसर प्रदान किया है ।

4.4 सामाजिक व्यवहार में बदलाव

96 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के संचालन से पूर्व गांव के कुछ समृद्ध और उच्च जाति के लोगों तक ही शुद्ध एवं पर्याप्त पेयजल की पहुंच थी। निम्न आय वर्ग एवं जाति के लोग स्वच्छ पेयजल से वंचित थे, उन्हें कुओं एवं तालाबों में उपलब्ध जल का उपयोग करना पड़ता था। इमलीखेड़ा गांव में जल संकट का समाधान करने में ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने अमूल्य योगदान दिया है। 94 प्रतिशत न्यादर्शों के अनुसार योजना के संचालन से गांव में जल संकट के कारण होने वाले लड़ाई–झगड़ों में कमी आयी है। 100 प्रतिशत न्यादर्शों के अनुसार योजना ने सामाजिक भेदभाव एवं तनाव को भी कम किया है। 93 प्रतिशत लोगों ने बताया कि गांव के लोगों में एकता एवं सहकार की भावना के साथ ही खुशहाली भी आयी है। सामाजिक मूल्यों में बदलाव आने से वैवाहिक सोच में भी बदलाव परिलक्षित

हो रहे हैं। 100 प्रतिशत लोगों के अनुसार अब विवाह आदि सामाजिक समारोहों में जल की समस्या से मुक्ति मिल गयी है। 95 प्रतिशत के अनुसार गांव की छवि में सुधार आया

है। अवलोकन से स्पष्ट है कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने इमलीखेड़ा गांव में सामाजिक गतिशीलता को प्रोत्साहित करके लोगों के जीवन स्तर को सुधारने में सहायता किया है। गांव में सह–अस्तित्त्व की भावना विकसित करने में भी योजना ने महती भूमिका निभायी है।

4.5 रोजगार के अवसर

इमलीखेड़ा के लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि है। कुछ लोग बाहर शहरों में रोजगार की चाह में गये हैं, तो कुछ लोग गांव में ही रहकर दिहाड़ी—मजदूरी आदि कार्यों को करके जीवन—यापन कर रहे हैं। ''हर घर नल—हर घर जल'' योजना के अंतर्गत आये बदलावों ने युवाओं को स्वरोजगार की ओर प्रेरित किया है। योजना के प्रभावस्वरूप जल संकट समाप्त होने और स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता के कारण युवाओं में अपने गांव के प्रति सकारात्मक सोच विकसित हुयी है। 92 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार युवाओं द्वारा गांव में रहना पसंद किया जा रहा है। 90 प्रतिशत के अनुसार ''हर घर नल—हर घर जल'' योजना ने युवाओं में पलायन की दर को कम किया है। युवाओं की भागीदारी कृषि एवं पशुपालन में बढ़ी है। महिलाओं में भी रोजगार के प्रति रूझान बढ़ा है। जिसके कारण वह हस्त—शिल्प जैसे कार्यों में अधिक रूचि ले रही हैं। युवाओं में आत्मविश्वास उत्पन्न करने में योजना ने अधिक योगदान दिया है। इस प्रकार से यह कह सकते हैं कि ''हर घर नल—हर घर जल'' योजना ने रोजगार के क्षेत्र में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन् किया है। यह कहना समीचीन होगा कि ''हर घर नल—हर घर जल'' योजना ने रोजगार जैसे क्षेत्र में भी अवसर उपलब्ध कराने में भूमिका निभायी है।

इस प्रकार निर्धारित लक्ष्य का सर्वेक्षण एवं अध्ययन से प्राप्त होता है कि शासन द्वारा संचालित महत्त्वाकांक्षी ''जल जीवन मिशन'' योजना के अंतर्गत ''हर घर नल—हर घर जल'' परियोजना जिस उद्देश्य को लेकर कार्य कर रही है, उसकी प्राप्ति को ग्राम इमलीखेड़ा, ग्राम पंचायत नौसारा, वि0ख0 चखरारी, जनपद महोबा का टीम सर्वे एवं अध्ययन के पश्चात् प्राप्त आंकड़े सुनिश्चित करते हैं। सरकार द्वारा संचालित एवं पोषित

परियोजना अपने लक्ष्य के अनुरूप कार्य कर रही है। योजना द्वारा गांव का समग्र विकास हुआ है, विशेषकर स्वास्थ्य, शिक्षा, महिलाओं की प्रस्थिति एवं सामाजिक सोच में सकारात्मक बदलाव आया है। अवलोकन में पेयजल के अपव्यय की समस्या देखी गयी जिसके लिए गांव के लोगों में जल के महत्त्व के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने की आवश्यकता है जिससे की प्रकृति द्वारा प्रदत्त अनमोल जल का संरक्षण किया जा सके।

ग्राम बमनेथा, ग्राम पंचायत नौसारा, विकास खण्ड चरखारी, जनपद महोबा

प्रस्तुत अध्ययन में ''जल जीवन मिशन'' के अंतर्गत संचालित ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना के परिणामस्वरूप ग्राम बमनेथा, ग्राम पंचायत नौसारा, विकास खण्ड चरखारी, जनपद महोबा में निवासित आबादी के जीवन–स्तर में आये बदलावों का

मूल्यांकन किया गया है। अध्ययन हेतु अवलोकन एवं सहभागी मूल्यांकन प्रणाली/विधियों का प्रयोग करते हुए अपेक्षित आंकड़ों को प्राप्त करके निष्कर्ष निकाले गये हैं। इसके

अंतर्गत सर्वप्रथम गांव की जनसंख्या, गांव में परिवारों की संख्या, जातीय समीकरण, परिवारों को प्राप्त जल संयोजनों की संख्या, शक्ति संरचना, प्राथमिक विद्यालयों की संख्या, पूर्व–माध्यमिक विद्यालय, आंगनबाड़ी तथा प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र के संदर्भ में जानकारी प्राप्त की गयी। शक्ति संरचना में सर्वप्रथम ग्राम प्रधान श्रीमती चन्दी देवी से गांव की समग्रता के संदर्भ में बात की गयी। पंचायत सदस्यों से भी बात करके गांव की मूलभूत समस्याओं के संदर्भ में जानकारी प्राप्त की गयी। इसके अतिरिक्त ग्राम में संचालित विद्यालय के प्रधानाध्यापक एवं शिक्षकों से बातचीत कर विद्यालय में छात्र/छात्राओं के नामांकन, मूलभूत सुविधाओं, जल संयोजन आदि की जानकारी प्राप्त की गई।

बमनेथा गांव में एक प्राथमिक विद्यालय सरकार द्वारा संचालित किया जा रहा है जिसके प्रधानाध्यापक श्री इन्द्रेश दत्त तिवारी हैं। विद्यालय में छात्र/छात्राओं का कुल नामांकन–27 है जिसमें 15 बालिकायें एवं 15 बालक हैं। विद्यालय में नल संयोजन से पेयजल की नियमित आपूर्ति हो रही है। बमनेथा ग्राम में एक आंगनबाड़ी केन्द्र संचालित है जिसकी सहायिका का नाम श्रीमती पुष्पा कुशवाहा है। आंगनबाड़ी सहायिका से बच्चों तथा शिशुओं एवं माताओं के पोषाहार, स्वास्थ्य तथा टीकाकरण आदि की जानकारी प्राप्त की गयी। गांव में प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र का अभाव पाया गया।

बमनेथा ग्राम की कुल आबादी–400 है एवं मतदाताओं की संख्या–180 है। ग्राम में कुल परिवारों की संख्या–120 है। गांव में कुल नल संयोजनों की संख्या–70 है अर्थात् गांव में निवासित सभी परिवारों को नल संयोजन से संतृप्त नहीं किया गया है, जो भी

परिवार जल संयोजन से संतृप्त हैं उनमें नियमित रूप से स्वच्छ पेयजल की आपूर्ति हो रही है। गांव के लोगों की आय का मुख्य स्त्रोत कृषि है। लगभग 50 प्रतिशत आबादी कृषि कार्यों में संलग्न है और जीवकोपार्जन कर रही है।

नोट : *अध्ययन का उद्देश्य, उपकल्पना, प्रणाली तथा उपकरण पूर्व वर्णित विषय के अनुसार ही सुनिश्चित किया गया है।*

1.0 निदर्श निर्धारण

बमनेथा ग्राम की कुल जनसंख्या–400 है। निदर्श निर्धारण हेतु स्तरीकृत दैव निदर्शन विधि का प्रयोग किया गया है। ग्राम बमनेथा की कुल जनसंख्या के 1/10 वें भाग को प्रत्येक प्रस्तर से अध्ययन में सम्मिलित किया गया है (400/10 = 40)। इस प्रकार प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श के रूप में कुल 40 लोगों (महिला और पुरूष) को, जो कि बमनेथा ग्राम के निवासी हैं, सम्मिलित करके योजना के प्रभाव को जाना गया। साथ ही योजना के प्रभाव के संदर्भ में ग्राम बमनेथा के हितधारकों से भी चर्चा की गयी।

2.0 समाविष्ट के मानदण्ड

ग्राम बमनेथा में सरकार द्वारा संचालित योजना ''हर घर नल–हर घर जल'' के प्रभाव मूल्यांकन हेतु ग्राम की सम्पूर्ण जनसंख्या का 1/10 वें भाग के साथ ही ग्राम के हितधारकों को भी अध्ययन का आधार बनाया गया, जिसमें वयस्क स्त्री, पुरूष और वृद्ध सम्मिलित हैं। अध्ययन में उन्हीं इकाइयों का चयन न्यादर्श रूप में किया गया है जो

वर्णित योजना से पूर्णतः संतृप्त हैं एवं नियमित रूप से स्वच्छ पेयजल की प्राप्ति कर रहे हैं।

3.0 बहिष्करण के मानदण्ड

प्रस्तुत अध्ययन में किसी–भी ऐसे व्यक्ति को सम्मिलित नहीं किया गया है, जो ग्राम बमनेथा से सम्बद्ध और वर्णित योजना का लाभार्थी नहीं था। साथ ही नल संयोजन से वंचित परिवारों के लोगों को भी अध्ययन में न्यादर्श रूप में सम्मिलित नहीं किया गया है।

4.0 परिणाम एवं चर्चा

सहभागी मूल्यांकन एवं अवलोकन द्वारा प्राप्त परिणामों से स्पष्ट है कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने लोगों के जीवन के विविध पक्षों को प्रभावित कर सकारात्मक बदलावों को लाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया है। प्रस्तुत अध्ययन में ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा कृत कार्य से बमनेथा गांव के लोगों के जीवन स्तर में आये बदलावों का वर्णन किया गया है जो निम्नलिखित है–

4.1 सामाजिक परिवर्तन के संदर्भ में

प्रस्तुत अध्ययन के इस खण्ड में कुल 40 न्यादर्शों में से 20 महिला न्यादर्शों को सम्मिलित करके उनसे प्राप्त आंकड़ों के आधार पर ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना लागू होने के पश्चात् महिलाओं के जीवन स्तर में आये बदलावों को जानने का प्रयास

किया गया है। न्यादर्श में 98 प्रतिशत महिला उत्तरदाताओं ने कहा कि योजना लागू होने के बाद से उनके स्वास्थ्य स्तर में सुधार आने के साथ ही उनकी शारीरिक एवं मानसिक

स्थितियों में भी सुधार आया है। 100 प्रतिशत न्यादर्शों ने बताया कि वर्णित योजना ने महिलाओं के जीवन स्तर में सुधार करके उन्हें सम्मानजनक जीवन जीने का अवसर प्रदान किया है। 95 प्रतिशत महिलाओं ने बताया कि पूर्व की अपेक्षा वह बच्चों की शिक्षा

पर अधिक ध्यान दे रही हैं क्योंकि समय बचत होने से वह इसका उपयोग बच्चों की पढ़ाई–लिखाई पर कर रही हैं। न्यादर्श में सम्मिलित 97 प्रतिशत महिला उत्तरदाताओं ने बताया कि वर्णित योजना के लागू होने से उनके कार्य बोझ में कमी आयी है। 92 प्रतिशत न्यादर्शों ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना संचालित होने से पूर्व बहुत दूर से पीने एवं खाना बनाने हेतु जल लाना पड़ता था जिसके कारण समय तो अधिक लगता ही था, साथ ही कमर एवं गर्दन में दर्द भी बना रहता था, जिसके इलाज पर अनावश्यक धन की बर्बादी होती थी। अब योजना लागू होने से इस समस्या से छुटकारा मिल गया है। 100 प्रतिशत न्यादर्शों के अनुसार दूषित जल पीने से मुक्ति मिल गयी है जिसके कारण पेट संबंधी बीमारियों में कमी आयी है। 94 प्रतिशत महिलाओं ने बताया कि धन एवं समय की बचत के साथ ही स्वास्थ्य स्तर में भी सुधार आने से गांव की कुछ महिलायें छोटे–मोटे काम करके पैसे भी कमा रही हैं जिससे उनको दैनिक खर्च हेतु दूसरों पर निर्भर रहने की आवश्यकता नहीं है। 92 प्रतिशत महिला न्यादर्शों के अनुसार परिवार में उनकी स्वीकृति एवं सम्मान में बढ़ोत्तरी हुई है जिससे उन्हें खुशहाल जीवन जीने का अवसर प्राप्त हुआ है। अध्ययनकर्ता द्वारा अवलोकन में पाया गया कि गांव में महिलाओं के प्रति धारणा में परिवर्तन आया है। गांव के लोगों द्वारा महिलाओं की भूमिका एवं अस्तित्त्व को स्वीकार किया जा रहा है। अतः स्पष्ट है कि वर्णित योजना ने लैंगिक समानता को प्रोत्साहित करते हुये महिलाओं में अपने अधिकारों के प्रति जागरूकता उत्पन्न किया है। इसके अतिरिक्त ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने महिलाओं के सर्वांगीण विकास को भी पोषित किया है। पेयजल के क्लोरीनीकरण से आने वाली महक

के कारण कुछ लोगों द्वारा यह कहते हुए उपयोग नहीं किया जाता है कि इस जल को जानवर भी नहीं पीते हैं, तो हम लोग कैसे पियें। इस धारणा को समाप्त करने के लिए शिक्षा एवं जागरूकता तथा आत्मविश्वास लाने की आवश्यकता है। इसके लिए समुदाय, सिविल सोसाइटी एवं गैर–सरकारी संगठनों की सहायता लेने की आवश्यकता है।

4.2 शिक्षा की स्थिति में बदलाव

बमनेथा ग्राम में कुल लगभग 120 परिवार हैं जिसमें से 70 परिवारों को नल संयोजन से संतृप्त किया जा चुका है। लगभग 50 परिवार अभी भी नल संयोजन से संतृप्त नहीं हैं। यद्यपि कि इसमें से कुछ परिवार गांव से जीवकोपार्जन हेतु शहरों में

पलायन कर गये हैं। यहां इसे बताने का अर्थ केवल इतना है कि वर्तमान में गांव में

निवास करने वाले कुछ ही परिवार हैं, जो नल संयोजन से संतृप्त नहीं हैं। चूंकि शिक्षा भी स्वास्थ्य से जुड़ा मुद्दा है और उत्तम स्वास्थ्य की प्राप्ति के लिए स्वच्छ पेयजल की नितांत आवश्यकता होती है। स्वच्छ पेयजल के लिए गांव के सभी परिवारों को ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से आच्छादित किया जाना आवश्यक है। बमनेथा गांव के अधिकतर परिवार वर्णित योजना से संतृप्त हो चुके हैं जिसके कारण गांव के लोगों के स्वास्थ्य एवं बच्चों की शिक्षा में समग्र परिवर्तन देखा जा सकता है। 96 प्रतिशत न्यादर्शों के अनुसार बमनेथा गांव में निवासित लोगों में शिक्षा के प्रति जागरूकता उत्पन्न हुयी है। न्यादर्श में सम्मिलित 95 प्रतिशत लोगों ने बताया कि बच्चे एवं बच्चियां नियमित रूप से विद्यालय जा रहे हैं। विद्यालय में नामांकित एवं उपस्थित विद्यार्थियों से चर्चा में पता चला कि विद्यालय में उन्हें ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा नियमित रूप से स्वच्छ पेयजल प्राप्त हो रहा है। 100 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बताया कि उन्हें शौचालय की सुविधा भी नियमित रूप से प्राप्त हो रही है और योजना लागू होने के बाद से शौचालय में नियमित पानी की आपूर्ति भी हो रही है जिसके कारण शौचालय पूर्व की अपेक्षा अधिक साफ–सुथरा रहता है। प्रधानाध्यापक ने बताया कि अभिभावकों में जागरूकता एवं विद्यालय में सुविधाओं के बढ़ने से बच्चों के नामांकन एवं उपस्थित में वृद्धि हुई है। गांव की बालिकायें भी नियमित रूप से विद्यालय में पढ़ने आ रही हैं जिससे उनकी साक्षरता दर में सुधार आया है। 96 प्रतिशत अभिभावकों ने कहा कि वह अपने बच्चों की पढ़ाई पर योजना संचालित होने के बाद से इलाज पर आने वाले खर्च की कमी से धन का निवेश अधिक कर रहे हैं।

अध्ययनकर्ता द्वारा अवलोकन के आधार पर यह कहना समीचीन होगा कि बमनेथा गांव में शिक्षा के प्रति जागरूकता आयी है। अभिभावकों द्वारा बच्चों की शिक्षा पर अधिक ध्यान दिया जा रहा है। गांव की साक्षरता दर में भी सुधार आया है। बालिकाओं को भी नियमित रूप से विद्यालय भेजा जा रहा है जिसके कारण उनमें भी शिक्षा के प्रति रूझान बढ़ा है।

4.3 स्वास्थ्य संबंधी बदलाव

अध्ययन में सम्मिलित 95 प्रतिशत न्यादर्शों ने कहा कि वर्णित योजना ने दूषित

जल की समस्या का समाधान प्रस्तुत करके जल जनित बीमारियों में कमी किया है। 100 प्रतिशत न्यादर्शों ने स्वीकार किया कि पूर्व की अपेक्षा उनके स्वास्थ्य स्तर में योजना

संचालित होने के बाद से सुधार आया है। 100 प्रतिशत ने बताया कि इलाज पर होने वाले खर्च में कमी आयी है। न्यादर्श में सम्मिलित 93 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि जल जनित बीमारियों के इलाज हेतु कर्ज लेने की जरूरत अब नहीं है। 98 प्रतिशत न्यादर्शों ने बताया कि उनका शारीरिक एवं मानसिक स्तर सुदृढ़ हुआ है। हितधारकों से हुयी परिचर्चा में पाया गया कि गांव में निवासित आबादी के स्वास्थ्य स्तर में सुधार आने से उनकी कार्य क्षमता एवं प्रदर्शन में सुधार आया है। बच्चों एवं महिलाओं का स्वास्थ्य स्तर उच्च हुआ है जिसके कारण पेट संबंधी बीमारियां कम देखी जा रही हैं। अतएव यह कहना समीचीन होगा कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने उक्त गांव में स्वास्थ्य स्तर में सुधार करके लोगों का कल्याण करते हुये खुशहाल जीवन जीने का अवसर प्रदान किया है।

4.4 सामाजिक व्यवहार में बदलाव

अध्ययन में सम्मिलित 97 प्रतिशत न्यादर्शों के अनुसार वर्णित योजना के संचालन से पूर्व गांव में सभी लोगों को स्वच्छ पेयजल उपलब्ध नहीं था। गांव के उच्च जातियों एवं समृद्ध लोगों तक ही स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता थी। इस कारण से अधिकांश आबादी को दूषित जल से ही संतोष करना पड़ता था। ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना लागू होने के बाद से उक्त समस्या का समाधान प्रस्तुत हुआ है। 100 प्रतिशत न्यादर्शों ने स्वीकार किया कि उन्हें अब नियमित रूप से स्वच्छ पेयजल प्राप्त हो रहा है। 96 प्रतिशत न्यादर्शों ने कहा कि पूर्व में पेयजल संबंधी विवाद गांव में अधिक होते थे जिसका समाधान वर्णित योजना से हुआ है। 100 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि

सरकार ने हर घर जल पहुंचा कर गांव के लोगों के साथ न्यायपूर्ण व्यवहार करते हुये एक गंभीर समस्या का समाधान किया है। 97 प्रतिशत न्यादर्शों के अनुसार वर्णित योजना के संचालन से गांव में जल संकट के कारण होने वाले लड़ाई–झगड़ों का शमन हुआ

है। 98 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार योजना ने गांव में सामाजिक भेदभाव एवं तनाव में कमी किया है। 92 प्रतिशत न्यादर्शों ने कहा कि गांव में जागरूकता आने से बाल विवाह में कमी आयी है क्योंकि अब गांव में लोगों के सामाजिक मूल्यों में बदलाव आया है, शिक्षा की स्थिति में सुधार हुआ है, लोगों का जीवन स्तर उन्नत हुआ है। इस प्रकार से स्पष्ट है कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने सामाजिक मूल्यों में बदलाव करते हुये लोगों की सोच को भी परिवर्तित किया है जिसके कारण उनकी सोच में प्रगतिशील

तत्त्वों का समावेश हुआ है। परिणामस्वरूप बमनेथा गांव के लोगों के सामाजिक व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन दृष्टिगोचर हो रहा है।

4.5 रोजगार के अवसर

बमनेथा गांव में निवासित अधिकतर लोगों की आय का मुख्य स्त्रोत कृषि एवं संबंधित गतिविधियां हैं। गांव के कुछ लोग शहरों में जीवकोपार्जन हेतु चले गये हैं। ''हर

घर नल–हर घर जल'' योजना ने लोगों के स्वास्थ्य स्तर को उन्नत करके उन्हें आय अर्जक गतिविधियों में संलग्न किया है। युवाओं में योजना के प्रति संतुष्टि का भाव है।

95 प्रतिशत न्यादर्श में सम्मिलित युवाओं ने बताया कि वह गांव में ही रहना चाहते हैं क्योंकि अब जल संकट का समाधान हो गया है और रोजगार के बेहतर विकल्प भी गांव में उपलब्ध हैं। गांव के युवाओं में डेयरी, मत्स्य पालन एवं कुक्कुट पालन की ओर झुकाव देखा गया है। कुछ युवा सब्जी उत्पादन में भी हाथ आजमाने के इच्छुक हैं। 91 प्रतिशत न्यादर्शों ने स्वीकार किया कि गांव में युवाओं के पलायन में कमी आयी है। गांव में पेयजल की उपलब्धता से पशुपालन में भी युवाओं एवं महिलाओं की भागीदारी बढ़ी है। अध्ययनकर्ता द्वारा अवलोकन में पाया गया कि गांव में पलायन के प्रति लोगों की सोच में सकारात्मक परिवर्तन आया है। रोजगार के विविध विकल्पों में युवाओं की भागीदारी बढ़ी है। युवाओं में आत्मविश्वास एवं आत्मनिर्भरता बढ़ी है और उनमें बेरोजगारी की दर में कमी आयी है।

अतः बमनेथा ग्राम के अध्ययन के उपरांत समग्र विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकालना समीचीन होगा कि शासन द्वारा संचालित महत्त्वाकांक्षी ''जल जीवन मिशन'' योजना के अंतर्गत ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में बमनेथा ग्राम में सफल रही है। योजना द्वारा कृत कार्य के प्रति गांव के लोगों में संतुष्टि देखी जा सकती है। ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने गांव के समग्र विकास को पोषित करके गांव में निवासित आबादी के जीवन स्तर में आमूल–चूल परिवर्तन करते हुए उनके जीवन स्तर को उच्च किया है। यह योजना उक्त गांव में खुशहाली एवं समृद्धि का प्रतीक बनी हुई है। वर्णित योजना द्वारा आपूर्ति किये जाने वाले जल के प्रति मिथ्या धारणा को समाप्त करके इस योजना से प्राप्त परिणाम को और अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है,

क्योंकि जल को शुद्ध करने के लिए मिलाये जाने वाले क्लोरीन से महक आने के कारण गांव के कुछ लोग अपने स्वास्थ्य के प्रति सशंकित हैं, उन्हे डर है कि उनके स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव पड़ सकता है। अतएव यह कहा जा सकता है कि लोगों में जागरूकता एवं चेतना उत्पन्न करके उक्त योजना से और अधिक सकारात्मक परिणाम प्राप्त किये जा सकते हैं।

ग्राम पंचायत काशीपुरा, विकास खण्ड पनवारी, जनपद महोबा

''जल जीवन मिशन'' योजना के अंतर्गत ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना केन्द्र सरकार द्वारा वर्ष 2019 में प्रत्येक ग्रामीण परिवार को शुद्ध एवं नियमित पेयजल की

उपलब्धता सुनिश्चित करने के उद्‌देश्य से संचालित किया गया था। योजना का उद्‌देश्य जल संकट का समाधान एवं स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता के साथ ही ग्रामीण जीवन का समग्र विकास करना भी है। प्रस्तुत अध्ययन के अंतर्गत महोबा जनपद के पनवारी

विकास खण्ड के ग्राम पंचायत काशीपुरा में ''जल जीवन मिशन'' योजना के अंतर्गत ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के प्रभाव को लोगों के जीवन स्तर पर देखा गया है। सर्वप्रथम अध्ययन हेतु ग्राम पंचायत काशीपुरा की कुल जनसंख्या, ग्राम पंचायत में कुल परिवारों की संख्या, कुल मतदाताओं की संख्या, जातीय विविधता, नल कनेक्शनों की संख्या, शक्ति संरचना, ग्राम पंचायत में स्थित विद्यालयों की संख्या, आंगनबाड़ी तथा प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र की उपलब्धता, अर्थव्यवस्था का प्रकार, कृषि प्रणाली तथा अन्य महत्त्वपूर्ण जानकारियों को एकत्रित किया गया। ग्राम पंचायत काशीपुरा के संदर्भ में समग्र जानकारी एकत्र करने के लिए सर्वप्रथम ग्राम प्रधान श्री महिपत श्रीवास से परिचर्चा करके ग्राम पंचायत काशीपुरा की सामाजिक–आर्थिक, शैक्षिक पृष्ठभूमि से संबंधित आंकड़ों को प्राप्त किया गया। ग्राम पंचायत के हितधारकों जैसे– पंचायत सदस्यों, गांव में संचालित विद्यालय के प्रधानाध्यापक, रोजगार सेवक और काशीपुरा ग्राम पंचायत के सामाजिक रूप से प्रतिष्ठित लोगों से चर्चा किया गया।

समग्र चर्चा से पता चला कि ग्राम पंचायत काशीपुरा में एक प्राथमिक विद्यालय एवं एक पूर्व माध्यमिक विद्यालय शासन द्वारा संचालित किया जा रहा है। प्राथमिक विद्यालय में कुल 95 विद्यार्थी नामांकित हैं। प्राथमिक विद्यालय में कुल 03 शिक्षक एवं 03 शिक्षा मित्र सेवायोजित हैं। पूर्व माध्यमिक विद्यालय के प्रधानाध्यापक का नाम श्री प्रशांत भोज है। उक्त दोनों विद्यालय नल संयोजन से पूर्णतः संतृप्त हैं जिससे नियमित स्वच्छ पेयजल उपलब्ध हो रहा है। ग्राम पंचायत काशीपुरा में एक आंगनबाड़ी केन्द्र संचालित हैं जिसकी सहायिका का नाम श्रीमती जानकी देवी है। आंगनबाड़ी सहायिका

से बच्चों एवं गर्भवती तथा स्तनपान कराने वाली माताओं के स्वास्थ्य एवं पोषाहार के संदर्भ में जानकारी एकत्र की गयी जो कि संतोषजनक पाया गया। ग्राम पंचायत काशीपुरा में एक प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र भी है। स्वास्थ्य केन्द्र में नियोजित सुश्री निहारिका द्विवेदी से स्वास्थ्य केन्द्र में उपलब्ध स्वास्थ्य सुविधाओं के संबंध में जानकारी प्राप्त की गयी।

ग्राम पंचायत काशीपुरा की कुल जनसंख्या लगभग 5000 है एवं मतदाताओं की कुल संख्या लगभग 2900 है तथा कुल परिवारों की संख्या लगभग 500 है। ग्राम पंचायत में निवासित प्रत्येक परिवार को नल कनेक्शन प्रदान किया गया है जिससे उन्हें नियमित रूप से स्वच्छ पेयजल की आपूर्ति हो रही है। ग्राम पंचायत के लोगों की आय का मुख्य स्त्रोत कृषि एवं मजदूरी है। जल संकट के कारण कृषि अत्यंत निम्न स्तर की है जिसके कारण जल गहन फसलों का उत्पादन नहीं हो पाता है। काशीपुरा ग्राम पंचायत के कुछ लोग दिहाड़ी–मजदूरी करके भी जीवन यापन कर रहे हैं। गांव में मुख्यतः ठाकुर एवं अहिरवार जाति के लोग निवास करते हैं।

नोट : *अध्ययन का उद्देश्य, उपकल्पना, प्रणाली तथा उपकरण पूर्व वर्णित विषय के अनुसार ही सुनिश्चित किया गया है।*

1.0 निदर्श निर्धारण

ग्राम पंचायत काशीपुरा की कुल आबादी लगभग 5000 है। सहभागी मूल्यांकन पर आधारित प्रस्तुत अध्ययन में स्तरीकृत दैव निदर्शन का प्रयोग करते हुए समग्र के प्रत्येक

प्रस्तर से 10 प्रतिशत लोगों का चुनाव ग्राम पंचायत काशीपुरा से किया गया है। प्रत्येक प्रस्तर पर 1/10 भाग को अध्ययन का आधार बनाया गया। इस प्रकार से कुल 5000/10 = 500 लोगों को प्रस्तुत अध्ययन, जो कि अवलोकन एवं सहभागी मूल्यांकन पर आधारित है, में सम्मिलित किया गया। अध्ययन में 18 वर्ष से ऊपर की स्त्रियों एवं पुरूषों को समानुपात (50:50 प्रतिशत) में सम्मिलित करके उनके जीवन स्तर पर ''जल जीवन मिशन'' के अंतर्गत संचालित परियोजना ''हर घर नल–हर घर जल'' के प्रभाव को देखा गया है। प्रस्तुत अध्ययन में हितधारकों के रूप में ग्राम पंचायत काशीपुरा के प्रधान एवं पंचायत सदस्यों से भी ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना के बहु–आयामी प्रभावों पर चर्चा की गई। ग्राम पंचायत काशीपुरा में संचालित प्राथमिक एवं पूर्व माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों को भी प्रस्तुत अध्ययन में हितधारक के रूप में सम्मिलित करके योजना के प्रभाव से ग्राम पंचायत में निवासित लोगों के जीवन स्तर में आये बदलावों को समझने का प्रयास किया गया। विद्यालयों में नामांकित छात्र/छात्राओं को भी अध्ययन में सम्मिलित करके योजना संचालित होने के पश्चात् उनके जीवन–स्तर में आये बदलावों को जानने का प्रयास किया गया। ग्राम पंचायत काशीपुरा में संचालित आंगनबाड़ी केन्द्र की सहायिका एवं प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र के चिकित्सकों को भी हितधारकों के रूप में सम्मिलित करके योजना के प्रभाव के संदर्भ में जानकारी प्राप्त की गई है। अवलोकन एवं सहभागी मूल्यांकन हेतु अध्ययन में कुल 500 लोगों को न्यादर्श रूप में सम्मिलित किया गया है जिसमें से 250 पुरूष और 250 महिलायें हैं।

2.0 समाविष्ट के मानदण्ड

ग्राम पंचायत काशीपुरा विकास खण्ड पनवारी, जनपद महोबा में सरकार द्वारा संचालित योजना ''हर घर नल–हर घर जल'' के प्रभाव मूल्यांकन हेतु ग्राम पंचायत काशीपुरा की सम्पूर्ण जनसंख्या का 1/10 भाग (500 न्यादर्श) और ग्राम पंचायत के हितधारकों को अध्ययन में सम्मिलित किया गया है, जिसमें 18 वर्ष से ऊपर के स्त्री एवं पुरूष सम्मिलित हैं।

3.0 बहिष्करण के मानदण्ड

प्रस्तुत अध्ययन में ग्राम पंचायत काशीपुरा में निवास ना करने वाले व्यक्तियों को न्यादर्श के रूप में सम्मिलित नहीं किया गया है। साथ ही ग्राम पंचायत काशीपुरा से असंबद्ध हितधारकों को भी अध्ययन में उत्तरदाताओं के रूप में सम्मिलित नहीं किया गया है।

4.0 अवलोकन एवं सहभागी मूल्यांकन के आधार पर प्राप्त परिणाम

अध्ययन में अवलोकन एवं सहभागी मूल्यांकन के आधार पर ग्राम पंचायत काशीपुरा, विकास खण्ड पनवारी, जनपद महोबा में निवास करने वाली आबादी के सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक एवं स्वास्थ्य स्तर पर ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना के बहु–आयामी प्रभावों का निष्पक्षता से अध्ययन किया गया है। गांव के लोगों के जीवन के विविध पक्षों पर वर्णित योजना के प्रभाव संबंधी परिणाम निम्नलिखित हैं–

4.1 सामाजिक परिवर्तन के संदर्भ में

प्रस्तुत अध्ययन के इस भाग में कुल 250 महिला न्यादर्शों को सम्मिलित करते हुये उनसे प्राप्त आंकड़ों के आधार पर महिलाओं के जीवन स्तर में ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना संचालित होने के पश्चात् आये बदलावों का वर्णन किया गया है। अध्ययन में सम्मिलित 100 प्रतिशत महिला उत्तरदाताओं ने कहा कि ''हर घर नल–हर

घर जल'' योजना संचालित होने के बाद से उनके स्वास्थ्य स्तर में सुधार आया है। 98 प्रतिशत महिला न्यादर्शों ने स्वीकार किया कि जल जनित बीमारियों से स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता के कारण मुक्ति मिली है। 95 प्रतिशत महिलाओं ने बताया कि पूर्व में जल संचयन पर लगने वाले समय की बचत हुयी है जिसके कारण वह बचे हुये समय का

उपयोग बच्चों की शिक्षा, कृषि एवं पशुपालन तथा छोटे–मोटे कार्यों में कर रही हैं। 100 प्रतिशत महिलाओं में योजना द्वारा कृत कार्य के प्रति संतुष्टि पायी गयी। 100 प्रतिशत महिलाओं ने स्वीकार किया कि पेयजल की आपूर्ति नियमित रूप से हो रही है। 97 प्रतिशत महिलायें स्वयं को पूर्व की अपेक्षा अधिक ऊर्जावान महसूस करती हैं। योजना द्वारा महिलाओं के जीवन स्तर में परिवर्तन आने के कारण समाज एवं परिवार में उनके सम्मान में बढ़ोत्तरी हुई है। इस प्रकार से यह कहा जा सकता है कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा महिलाओं की प्रस्थिति में सकारात्मक बदलाव आये हैं। जल को शुद्ध करने हेतु क्लोरीनीकरण से आने वाली महक के कारण कुछ महिलाओं में जागरूकता एवं शिक्षा की कमी होने के कारण आपूर्ति किये जाने वाले जल को पेयजल के रूप में प्रयोग करने के प्रति डर व्याप्त है, जिसका समाधान काशीपुरा ग्राम पंचायत के निवासित लोगों में जागरूकता लाकर ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना को और प्रभावी बनाया जा सकता है।

4.2 शिक्षा की स्थिति में बदलाव

''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने काशीपुरा ग्राम पंचायत की साक्षरता दर में सुधार को प्रेरित किया है जिसकी पुष्टि काशीपुरा ग्राम पंचायत के बालक एवं बालिकाओं का विद्यालय में 100 प्रतिशत नामांकन एवं उपस्थिति से होती है। अध्ययन में सम्मिलित 100 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा काशीपुरा ग्राम में शिक्षा के प्रति जागरूकता आयी है। 98 प्रतिशत न्यादशों ने कहा कि

बच्चों के स्वास्थ्य में योजना संचालित होने के पश्चात् सुधार आने के कारण शिक्षा के प्रति लगाव बढ़ा है और वह नियमित रूप से विद्यालय तो जा ही रहे हैं, साथ ही घर पर भी पढ़ाई–लिखाई पर अधिक समय व्यतीत कर रहे हैं। 90 प्रतिशत न्यादर्शों ने कहा कि इलाज पर खर्च कम होने के कारण बचे पैसे का उपयोग वह बच्चों की शिक्षा पर कर रहे हैं। प्राथमिक विद्यालय के प्रधानाचार्य से हुयी वार्ता में पता चला कि बच्चों का नामांकन पूर्व की अपेक्षा बढ़ा है और उनमें स्वच्छता के प्रति भी चेतना उत्पन्न हुयी है। बालिकाओं की शिक्षा के संबंध में बात करने पर प्रधानाचार्य ने बताया कि बालिकाओं की उपस्थिति में योजना संचालित होने के बाद से वृद्धि हुयी है। पूर्व में बालिकायें विद्यालय

में नाम तो लिखवा लेती थी लेकिन यदा–कदा ही विद्यालय में पढ़ने आती थी। अध्ययनकर्ता द्वारा अवलोकन से स्पष्ट है कि काशीपुरा ग्राम में शिक्षा के प्रति जन–सामान्य में चेतना का विकास हुआ है जिससे शिक्षा के प्रति लोगों में उत्साह दृष्टिगोचर हो रहा है।

4.3 स्वास्थ्य संबंधी बदलाव

काशीपुरा ग्राम पंचायत के लोगों से हुई परिचर्चा में पता चला कि 100 प्रतिशत उत्तरदाता योजना संचालन के पश्चात् स्वास्थ्य स्तर में आये बदलावों के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति रखते हैं। 97 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि बीमारियों में कमी आने से इलाज पर खर्च होने वाले पैसे की बचत हुई है। 100 प्रतिशत न्यादर्शों ने स्वीकार किया कि काशीपुरा ग्राम पंचायत में निवासित सभी आयु वर्ग के लोगों के स्वास्थ्य स्तर में सुधार हुआ है और उनका शारीरिक एवं मानसिक तथा सांवेगिक स्वास्थ्य बेहतर हुआ है। 98 प्रतिशत न्यादर्शों ने कहा कि जल जनित बीमारियों में कमी आयी है। 92 प्रतिशत

उत्तरदाताओं ने कहा कि जलापूर्ति के कारण शौचालयों के सक्रिय होने से भी बीमारियों

में कमी आयी है। 96 प्रतिशत न्यादर्शों ने बताया कि योजना द्वारा जल उपलब्धता से नियमित स्नान करने के कारण शारीरिक स्वच्छता में वृद्धि हुई है जिससे चर्म रोगों में कमी आयी है। 100 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि अब पेट दर्द संबंधी बीमारियां बहुत कम हो गयी हैं और खाना ठीक से पच रहा है। काशीपुरा ग्राम पंचायत के न्यादर्शों एवं हितधारकों से हुई परिचर्चा में पता चला कि जल शुद्धि के लिए क्लोरीनीकरण के कारण जल से महक आती है जिसके कारण गांव के कुछ लोग जल को पेयजल के रूप में प्रयोग करने के प्रति सशंकित हैं, उन्हें जल का स्वाद ठीक नहीं लगता है। गांव के लोगों को शिक्षित एवं जागरूक करने की जरूरत है जिससे कि वह पेयजल के प्रति निर्मित गलत धारणा के मुक्त हो सकें। इस प्रकार से यह कहा जा सकता है कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने काशीपुरा ग्राम पंचायत के लोगों के स्वास्थ्य को बेहतर बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया है। लोगों में योजना के प्रति संतुष्टि का भाव है। लोगों में जागरूकता एवं चेतना उत्पन्न करके योजना को स्वास्थ्य के क्षेत्र और प्रभावी बनाया जा सकता है।

4.4 सामाजिक व्यवहार में बदलाव

100 न्यादर्शों ने बतया कि योजना संचालन से पूर्व काशीपुरा ग्राम पंचायत में निवासित सभी वर्गों तक शुद्ध पेयजल की उपलब्धता नहीं थी जिसके कारण उन्हें दूषित पेयजल से ही संतोष करना पड़ता था। ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना संचालित होने के बाद से सभी परिवारों को नल संयोजन से संतृप्त कर दिया गया है। अब प्रत्येक

परिवार को पर्याप्त पेयजल उपलब्ध हो रहा है। शिक्षा, आत्मविश्वास एवं जागरूकता की कमी के कारण कुछ लोगों में वर्णित योजना द्वारा आपूर्ति होने वाले जल की शुद्धता के

प्रति संदेह है क्योंकि जल से महक आने के कारण कुछ लोग नियमित रूप से इस जल का सेवन नहीं कर रहे है। फिर भी गांव के अधिकांश लोगों द्वारा इस जल का प्रयोग पीने में किया जा रहा है। 100 प्रतिशत न्यादर्शों ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के संचालन से पेयजल की समस्या समाप्त हो गयी है। 91 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि वर्णित योजना ने ग्रामीण समुदाय के लोगों की सोच में सकारात्मक परिवर्तन किया है। 95 प्रतिशत न्यादर्शों के अनुसार योजना द्वारा जल संकट

का समाधान करने से गांव में शांति एवं खुशहाली बहाल हुई है जिससे गांव में सह–अस्तित्त्व की भावना को पोषण मिला है। 90 प्रतिशत न्यादर्शों के अनुसार लोगों में प्रगतिशील मूल्यों के समावेश के कारण बाल–विवाह की दर में कमी आयी है और वह बाल–विवाह के दुष्प्रभावों के प्रति जागरूक हो गये हैं। अतएव यह कहना समीचीन होगा कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने काशीपुरा ग्राम पंचायत के लोगों के सामाजिक व्यवहार को सकारात्मक रूप से प्रभावित किया है और उनमें आत्मविश्वास की भावाना का विकास हुआ है।

4.5 रोजगार के अवसर

काशीपुरा ग्राम पंचायत के लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि एवं मजदूरी है। कुछ लोग जीवकोपार्जन हेतु शहरों में पलायन कर गये हैं। ग्राम पंचायत की अधिकतर कृषि भूमि असिंचित है जिसके कारण अधिशेष उत्पादन कर पाना कठिन होता है। 92 प्रतिशत युवाओं ने बताया कि वह ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा गांव में आये बदलावों के प्रति संतुष्ट हैं और अब गांव में ही रहकर रोजगार करने के इच्छुक हैं। 93 प्रतिशत न्यादर्शों के अनुसार योजना ने रोजगार के व्यापक विकल्प उपलब्ध कराये हैं जिसके कारण युवाओं में होने वाले पलायन में कमी आयी है। शहरों की दुःखदायी परिस्थिति एवं गांव में मूलभूत सुविधाओं की बढ़ोत्तरी के कारण युवाओं में अपने गांव के प्रति लगाव में वृद्धि हुई है। 90 प्रतिशत युवा स्वरोजगार के इच्छुक हैं। 93 प्रतिशत महिला उत्तरदाताओं ने बताया कि उनका रूझान भी रोजगार के प्रति बढ़ा है। ध्यातव्य है कि वर्णित योजना

ने रोजगार के विकल्पों को प्रस्तुत करके तथा गांव में मूलभूत सुविधाओं में बढ़ोत्तरी करके

युवाओं को गांव की ओर की आकर्षित किया है जिससे उनके पलायन दर में कमी आने के संकेत मिल रहे हैं।

''जल जीवन मिशन'' के अंतर्गत संचालित ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना ने काशीपुरा ग्राम पंचायत में आमूल–चूल परिवर्तन को प्रेरित किया है। यह योजना अपने

उद्देश्यों को प्राप्त करने में बहुत हद तक सफल रही है जिसकी पुष्टि सहभागी अवलोकन द्वारा न्यादर्शों एवं हितधारकों से प्राप्त आंकड़े करते हैं। योजना द्वारा उक्त ग्राम पंचायत में निवासित लोगों के जीवन–स्तर में आये सकारात्मक बदलावों के प्रति संतुष्टि का भाव परिलक्षित हो रहा है। अवलोकन में पाया गया कि काशीपुरा ग्राम पंचायत के कुछ लोगों में ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा आपूर्ति किये जाने वाले पेयजल के प्रति कुछ भ्रांतियां एवं संदेह है, जिसका निवारण शिक्षा, चेतना एवं जन–जागरूकता द्वारा किया जा सकता है और इस प्रकार योजना को और अधिक प्रभावी बनाते हुये लक्षित परिणाम प्राप्त किये जा सकते हैं।

ग्राम पंचायत लिलवा, विकास खण्ड पनवारी, जनपद महोबा

ग्राम पंचायत लिलवा की कुल जनसंख्या लगभग 1100 है एवं मतदाताओं की कुल संख्या लगभग 600 है तथा कुल परिवारों की संख्या लगभग 105 है। ग्राम पंचायत में निवासित प्रत्येक परिवार को नल कनेक्शन प्रदान किया गया है जिससे उन्हें नियमित

रूप से स्वच्छ पेयजल की आपूर्ति हो रही है। ग्राम पंचायत के लोगों की आय का मुख्य स्त्रोत कृषि एवं मजदूरी है। ग्राम पंचायत लिलवा की लगभग 60 प्रतिशत जमीन समतल एवं 40 प्रतिशत पठारी अथवा ऊबड़–खाबड़ है। असिंचित क्षेत्र के अंतर्गत आने के कारण सिंचाई के लिए पर्याप्त जल उपलब्ध नहीं हो पाता है जिसके कारण जल गहन फसलों का उत्पादन नहीं हो पाता है। इस कारण दलहन आदि की खेती अधिक होती है।

''जल जीवन मिशन'' योजना के अंतर्गत ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना केन्द्र सरकार द्वारा वर्ष 2019 में प्रत्येक ग्रामीण परिवार को शुद्ध एवं नियमित पेयजल की उपलब्धता सुनिश्चित करने के उद्देश्य से संचालित किया गया था। योजना का उद्देश्य जल संकट का समाधान एवं स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता के साथ ही ग्रामीण जीवन का समग्र विकास करना भी है। प्रस्तुत अध्ययन के अंतर्गत महोबा जनपद के पनवारी विकास खण्ड के ग्राम पंचायत लिलवा में ''जल जीवन मिशन'' योजना के अंतर्गत ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के प्रभाव को लोगों के जीवन स्तर पर देखा गया है। सर्वप्रथम अध्ययन हेतु ग्राम पंचायत लिलवा की कुल जनसंख्या, ग्राम पंचायत में कुल परिवारों की संख्या, कुल मतदाताओं की संख्या, जातीय विविधता, नल कनेक्शनों की संख्या, शक्ति संरचना, ग्राम पंचायत में स्थित विद्यालयों की संख्या, आंगनबाड़ी तथा प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र की उपलब्धता, अर्थव्यवस्था का प्रकार, कृषि प्रणाली तथा अन्य महत्त्वपूर्ण जानकारियों को एकत्रित किया गया। ग्राम पंचायत लिलवा के संदर्भ में समग्र जानकारी एकत्र करने के लिए सर्वप्रथम ग्राम प्रधान श्री सतीश रावत से परिचर्चा करके ग्राम पंचायत लिलवा की सामाजिक–आर्थिक, शैक्षिक पृष्ठभूमि से संबंधित आंकड़ों को प्राप्त किया गया। ग्राम पंचायत के हितधारकों जैसे– पंचायत सदस्यों, गांव में संचालित विद्यालय के प्रधानाध्यापक, रोजगार सेवक और लिलवा ग्राम पंचायत के सामाजिक रूप से प्रतिष्ठित लोगों से चर्चा किया गया।

समग्र चर्चा से पता चला कि ग्राम पंचायत लिलवा में एक प्राथमिक विद्यालय शासन द्वारा संचालित किया जा रहा है। प्राथमिक विद्यालय में कुल 106 विद्यार्थी नामांकित

हैं। प्राथमिक विद्यालय के प्रधानाचार्य ने बताया कि विद्यालय में कुल 04 सहायक शिक्षक नियोजित हैं। प्रधानाचार्य एवं शिक्षकों तथा विद्यालय में उपस्थित बच्चों से पूछने पर पता चला कि विद्यालय ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से पूर्णतः संतृप्त है जिससे नियमित रूप से स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता सुनिश्चित हो रही है। ग्राम पंचायत लिलवा में एक आंगनबाड़ी केन्द्र संचालित हैं जिसकी सहायिका से बच्चों एवं गर्भवती तथा स्तनपान कराने वाली माताओं के स्वास्थ्य एवं पोषाहार के संदर्भ में जानकारी एकत्र की गयी जो कि संतोषजनक पाया गया।

नोट : *अध्ययन का उद्देश्य, उपकल्पना, प्रणाली तथा उपकरण पूर्व वर्णित विषय के अनुसार ही सुनिश्चित किया गया है।*

1.0 निदर्श निर्धारण

ग्राम पंचायत लिलवा की कुल आबादी लगभग 1100 है। सहभागी मूल्यांकन हेतु प्रस्तुत अध्ययन में स्तरीकृत दैव निदर्शन का प्रयोग करते हुए समग्र के प्रत्येक प्रस्तर से 10 प्रतिशत लोगों का चुनाव ग्राम पंचायत लिलवा से किया गया है। प्रत्येक प्रस्तर पर 1/10 भाग को अध्ययन का आधार बनाया गया। इस प्रकार से कुल 1100/10 = 110 लोगों को प्रस्तुत अध्ययन, जो कि अवलोकन एवं सहभागी मूल्यांकन पर आधारित है, में सम्मिलित किया गया। अध्ययन में 18 वर्ष से ऊपर की स्त्रियों एवं पुरूषों को समानुपात (50:50 प्रतिशत) में सम्मिलित करके उनके जीवन स्तर पर ''जल जीवन मिशन'' के अंतर्गत संचालित परियोजना ''हर घर नल–हर घर जल'' के प्रभाव को देखा गया है।

प्रस्तुत अध्ययन में हितधारकों के रूप में ग्राम पंचायत लिलवा के प्रधान एवं पंचायत सदस्यों से भी ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना के बहु–आयामी प्रभावों पर चर्चा किया गया है। ग्राम पंचायत लिलवा में संचालित प्राथमिक विद्यालय के प्रधानाध्यापक को भी प्रस्तुत अध्ययन में हितधारक के रूप में सम्मिलित करके योजना के प्रभाव से ग्राम पंचायत में निवासित लोगों एवं विद्यालय में नामांकित बच्चों के जीवन स्तर में आये बदलावों को समझने का प्रयास किया गया। विद्यालयों में नामांकित छात्र/छात्राओं को भी अध्ययन में सम्मिलित करके योजना संचालित होने के पश्चात् उनके जीवन–स्तर में आये बदलावों को जानने का प्रयास किया गया। ग्राम पंचायत लिलवा में संचालित आंगनबाड़ी केन्द्र की सहायिका को भी हितधारकों के रूप में सम्मिलित करके योजना के प्रभाव के संदर्भ में जानकारी प्राप्त की गई है। अवलोकन एवं सहभागी मूल्यांकन हेतु अध्ययन में कुल 110 लोगों को न्यादर्श रूप में सम्मिलित किया गया है जिसमें से 55 पुरूष एवं 55 महिलायें हैं।

2.0 समाविष्ट के मानदण्ड

ग्राम पंचायत लिलवा विकास खण्ड पनवारी, जनपद महोबा में सरकार द्वारा संचालित योजना ''हर घर नल–हर घर जल'' के प्रभाव मूल्यांकन हेतु ग्राम पंचायत लिलवा की सम्पूर्ण जनसंख्या का 1/10 भाग (110 न्यादर्श) और ग्राम पंचायत के हितधारकों को अध्ययन में सम्मिलित किया गया है। न्यादर्श में 18 वर्ष से ऊपर के स्त्री एवं पुरूष सम्मिलित हैं।

3.0 बहिष्करण के मानदण्ड

प्रस्तुत अध्ययन में ग्राम पंचायत लिलवा में निवास ना करने वाले व्यक्तियों को न्यादर्श के रूप में सम्मिलित नहीं किया गया है। साथ ही ग्राम पंचायत लिलवा से असंबद्ध हितधारकों को भी अध्ययन में उत्तरदाताओं के रूप में सम्मिलित नहीं किया गया है।

4.0 अवलोकन एवं सहभागी मूल्यांकन के आधार पर प्राप्त परिणाम

अध्ययन में अवलोकन एवं सहभागी मूल्यांकन के आधार पर ग्राम लिलवा, विकास खण्ड पनवारी, जनपद महोबा में निवास करने वाली आबादी के सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक एवं स्वास्थ्य स्तर पर ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना के बहु–आयामी प्रभावों का निष्पक्षता एवं वस्तुनिष्ठता से अध्ययन किया गया है। गांव के लोगों के जीवन के विविध पक्षों पर वर्णित योजना के प्रभाव संबंधी परिणाम निम्नलिखित हैं–

4.1 सामाजिक परिवर्तन के संदर्भ में

प्रस्तुत अध्ययन के इस खण्ड के अंतर्गत ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा महिलाओं के जीवन स्तर में आये बदलावों का अध्ययन किया गया है। अध्ययन हेतु कुल 55 महिलाओं से प्राप्त आंकड़ों का प्रयोग किया गया है। न्यादर्श में सम्मिलित 100 प्रतिशत महिलाओं ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के संचालन के बाद से पेट संबंधी बीमारियों में कमी आयी है। 100 प्रतिशत महिलाओं ने बताया कि

वर्णित योजना से उनके स्वास्थ्य स्तर में सुधार आया है और वह शारीरिक एवं मानसिक रूप से मजबूत हुई हैं। 97 प्रतिशत महिला उत्तरदाताओं ने कहा कि उन्हें जल जनित बीमारियों से मुक्ति मिली है। 93 प्रतिशत महिला उत्तरदाताओं ने कहा कि पूर्व की अपेक्षा समय की बचत होने से वह बच्चों एवं परिवार को अधिक समय दे पा रही हैं। 100 प्रतिशत महिलाओं ने बताया अब उन्हें दिन में आराम करने के लिए पर्याप्त समय मिल

जाता है, ध्यातव्य है कि पूर्व में जल संकट के कारण जल संचयन पर महिलाओं का अधिकांश समय लग जाता था, जिससे अब छुटकारा मिल गया है। शिक्षा एवं जागरूकता

की कमी के कारण कुछ महिलायें पाइप द्वारा आपूर्ति होने वाले जल का प्रयोग पेयजल के रूप में करने के प्रति संकोच कर रही हैं, क्योंकि जल को शुद्ध करने के लिए मिलाये जाने वाले क्लोरीन से जल में महक आती है। कुल मिलाकर यह कहना समीचीन होगा कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा जल संकट का समाधान प्रस्तुत करने के साथ ही महिलाओं को सशक्त करने में भी योजना की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। लिलवा ग्राम की महिलाओं में योजना के प्रति संतुष्टि का भाव परिलक्षित हो रहा है जो उनकी खुशहाली में वृद्धि कर रहा है।

4.2 शिक्षा की स्थिति में बदलाव

वर्णित योजना द्वारा ग्राम पंचायत की शैक्षिक स्थिति में भी सुधार हुआ है। अध्ययन में सम्मिलित 97 प्रतिशत न्यादर्शों ने कहा कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा बच्चों की शिक्षा में पूर्व की अपेक्षा सुधार आया है। 98 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार बच्चे नियमित रूप से विद्यालय जा रहे हैं। 100 प्रतिशत न्यादर्शों ने बताया कि गांव में बालिकाओं की साक्षरता दर में भी सुधार आया है और वह नियमित रूप से विद्यालय जा रही हैं। प्रधानाचार्य के अनुसार ग्राम पंचायत में स्थित प्राथमिक विद्यालय नल संयोजन से पूर्णतः आच्छादित है जिससे विद्यार्थियों को नियमित रूप से स्वच्छ पेयजल की आपूर्ति हो रही है। प्रधानाचार्य के अनुसार बच्चों में स्वच्छता के प्रति जागरूकता आयी है जिसके कारण उनकी बोध क्षमता में भी सुधार देखा गया है। 97 प्रतिशत न्यादर्शों के अनुसार गांव के बच्चे घर पर पढ़ाई–लिखाई में अपना अधिक समय व्यतीत कर रहे हैं। स्वास्थ्य

स्तर में सुधार आने से अभिभावक भी बच्चों की शिक्षा पर अधिक ध्यान दे रहे हैं। 93 प्रतिशत न्यादर्शों ने बताया कि इलाज पर खर्च कम होने से बचे हुये पैसे का प्रयोग अभिभावकों द्वारा बच्चों की शिक्षा तथा अन्य आवश्यक कार्यों पर किया जा रहा है। अवलोकन में पाया गया कि गांव में कोई–भी बच्चा दिखाई नहीं दिया क्योंकि सभी बच्चे

स्कूल गये हुये थे। इसका अर्थ है कि 100 प्रतिशत बच्चों की उपस्थिति विद्यालय में हो रही है। अभिभावकों में भी बच्चों की शिक्षा के प्रति चिंता देखने को मिली। इस प्रकार से ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा शिक्षा के प्रति सकारात्मक परिवेश का निर्माण हुआ है।

4.3 स्वास्थ्य संबंधी बदलाव

स्वास्थ्य का मुद्दा व्यक्ति के जीवन से जुड़ा हुआ है जिसमें स्वच्छ जल का महत्त्वपूर्ण योगदान है। प्रस्तुत अध्ययन के इस खण्ड में ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा स्वास्थ्य स्तर में आये बदलावों का अध्ययन किया गया है। न्यादर्श में सम्मिलित 100 प्रतिशत लोगों ने स्वीकार किया कि पेट संबंधी बीमारियों में योजना संचालन के पश्चात् कमी आयी है। 98 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि उनका स्वास्थ्य स्तर पूर्व की अपेक्षा बेहतर हुआ है। 95 प्रतिशत के अनुसार वह अब अधिक ऊर्जावान महसूस कर रहे हैं। 96 प्रतिशत न्यादर्शों के अनुसार बीमारियों में कमी आने से इलाज

पर खर्च होने वाले पैसे की बचत हुई है। 100 प्रतिशत न्यादर्शों ने स्वीकार किया कि बच्चों एवं महिलाओं को योजना द्वारा स्वास्थ्य लाभ अधिक प्राप्त हुआ है। 93 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार पर्याप्त जल की उपलब्धता से शारीरिक स्वच्छता में वृद्धि हुई

है। 100 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि खाना अब अच्छे से पच रहा है। गांव के कुछ लोगों ने बताया कि आपूर्ति होने वाले पेयजल में महक आती है जिसके कारण वह उसका उपयोग पेयजल के रूप में करने के प्रति सशंकित हैं। कुछ लोगों ने यह भी कहा कि इस जल को जानवर भी नहीं पी रहे हैं, तो हम लोग कैसे पियें। ध्यातव्य है कि लोगों में जागरूकता एवं चेतना तथा शिक्षा की कमी के कारण इस प्रकार की धारणा व्याप्त है जिसका समाधान करके योजना से प्राप्त परिणाम को और प्रभावी बनाया जा सकता है। यद्यपि कि अध्ययनकर्ता द्वारा अवलोकन में पाया गया कि गांव के अधिकतर लोग ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा आपूर्ति किये जाने वाले जल का उपयोग पेयजल एवं अन्य दैनिक आवश्कताओं की पूर्ति में कर रहे हैं। कुल मिलाकर योजना अपने लक्ष्य के अनुरूप कार्य कर रही है और लिलवा ग्राम पंचायत के लोगों के स्वास्थ्य स्तर को उन्नत कर रही है।

4.4 सामाजिक व्यवहार में बदलाव

''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से लोगों के व्यवहार में बदलाव देखा गया है। न्यादर्श में सम्मिलित 98 प्रतिशत लोगों ने बताया कि वर्णित योजना के संचालन के पूर्व गांव में सभी लोगों तक स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता नहीं थी, बल्कि गांव के केवल साधन संपन्न लोगों तक ही स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता थी, क्योंकि स्वच्छ जल पर होने वाले खर्च का वहन कर पाना प्रत्येक व्यक्ति के लिए संभव नहीं था। 100 उत्तरदाताओं ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना संचालन के पश्चात् प्रत्येक परिवार

को स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता सुनिश्चित हुई है और अब प्रत्येक परिवार को नियमित रूप से स्वच्छ पेयजल की आपूर्ति की जा रही है। नियमित पेयजल की उपलब्धता के

कारण लिलवा ग्राम पंचायत के लोगों के आत्मविश्वास में वृद्धि हुई है, लोगों में सहकार, सहयोग एवं सह–अस्तित्त्व का भाव विकसित हुआ है। योजना ने लिलवा ग्राम पंचायत के लोगों के जीवन स्तर में भी सकारात्मक बदलाव किया है। गांव के अधिकांश लोगों ने शादी–विवाह के संबंध में पविर्तन के प्रति अनभिज्ञता प्रकट की। यद्यपि कि अध्ययनकर्ता द्वारा अवलोकन में पाया गया कि बाल विवाह एवं दहेज प्रथा जैसी कुप्रथा के प्रति लोगों में चेतना का विकास हुआ है।

4.5 रोजगार के अवसर

न्यादर्शों एवं हितधारकों द्वारा प्राप्त जानकारी के अनुसार गांव के अधिकांश लोगों की आय का स्त्रोत कृषि एवं मजदूरी है। गांव के कुछ लोग जीवकोपार्जन हेतु दिल्ली, सूरत, मुबई, अहमदाबाद जैसे शहरों में पलायन कर गये हैं। ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना लागू होने के बाद से रोजगार के अनेक विकल्प उपलब्ध हुये हैं। स्वास्थ्य में सुधार आने से कृषि एवं पशुपालन तथा अन्य व्यवसायों में महिलाओं एवं युवाओं की भागीदारी में वृद्धि देखी गयी है। 92 प्रतिशत युवाओं द्वारा गांव में ही रहकर स्व–रोजगार के प्रति इच्छा प्रकट की गयी। 93 प्रतिशत न्यादर्शों ने बताया कि युवाओं में ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना संचालन के पश्चात् पलायन में कमी आयी है। 96 प्रतिशत युवा वर्णित योजना द्वारा कृत कार्य के प्रति संतुष्ट हैं। न्यादर्श में सम्मिलित युवाओं से चर्चा करने पर पता चला कि अधिकतर युवा शहरों में इसलिए भी नहीं जाना चाहते, क्योंकि वहां उनके साथ भेदभाव पूर्ण व्यवहार किया जाता है। कंपनी मालिकों एवं ठेकेदारों का व्यवहार उनके प्रति ठीक नहीं रहता है और उन्हें समय से वेतन भी नहीं दिया जाता है। कुछ युवाओं ने बताया कि उनका वेतन भी काट लिया जाता है जिसका वह विरोध भी नहीं कर पाते हैं। न्यादर्श में सम्मिलित 93 प्रतिशत युवाओं ने कहा कि अब गांव में जल संकट का भी समाधान वर्णित योजना से हो गया है, इसलिए वह गांव में ही रहकर रोजगार को प्राथमिकता देंगे। इस प्रकार से समग्र विश्लेषण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा युवाओं के आत्मविश्वास में वृद्धि हुई है और उनमें जीवन के प्रति एक नये नजरिए का विकास हुआ है।

उपर्युक्त आयामों के संबंध में न्यादर्शों एवं हितधारकों से प्राप्त आंकड़ों के समग्र विश्लेषण के आधार पर यह कहना समीचीन होगा कि प्रस्तुत अध्ययन में ''जल जीवन मिशन'' के अंतर्गत संचालित ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना द्वारा कृत कार्य के प्रति लोगों में संतुष्टि भाव दृष्टिगोचर हो रहा है। वर्णित योजना अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में सफल रही है जिसकी पुष्टि अध्ययन से प्राप्त परिणामों के आधार पर होती है। चूंकि लोगों में अभी जागरूकता एवं चेतना की कमी है, इसलिए ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा आपूर्ति किये जाने वाले पेयजल के प्रति लिलवा ग्राम पंचायत के कुछ लोगों में मिथक है जिसका समाधान जन–जागरूकता द्वारा किया जा सकता है और योजना से परिणाम को और अधिक गुणवत्तापूर्ण बनाया जा सकता है। यद्यपि कि अभी–भी अध्ययन में जो परिणाम प्राप्त हुए हैं, वह भी लिलवा ग्राम पंचायत में निवासित लोगों के जीवन–स्तर में समग्र परिवर्तन की पुष्टि कर रहे हैं। इस प्रकार से यह स्पष्ट होता है कि वर्णित योजना लिलवा ग्राम पंचायत में खुशहाली का प्रतीक बनी हुई है और लोग खुशहाल जीवन जी रहे हैं।

ग्राम धनावन, ग्राम पंचायत भटेवारा, विकास खण्ड चरखारी, जनपद महोबा

''जल जीवन मिशन'' के ''हर घर नल–हर घर जल'' कार्यक्रम के अंतर्गत ग्राम पंचायत भटेवारा, विकास खण्ड चरखारी, जनपद महोबा के अंतर्गत ग्राम धनावन का अध्ययन किया गया है। इसके अंतर्गत सर्वप्रथम गांव की जनसंख्या, गांव में कुल परिवारों

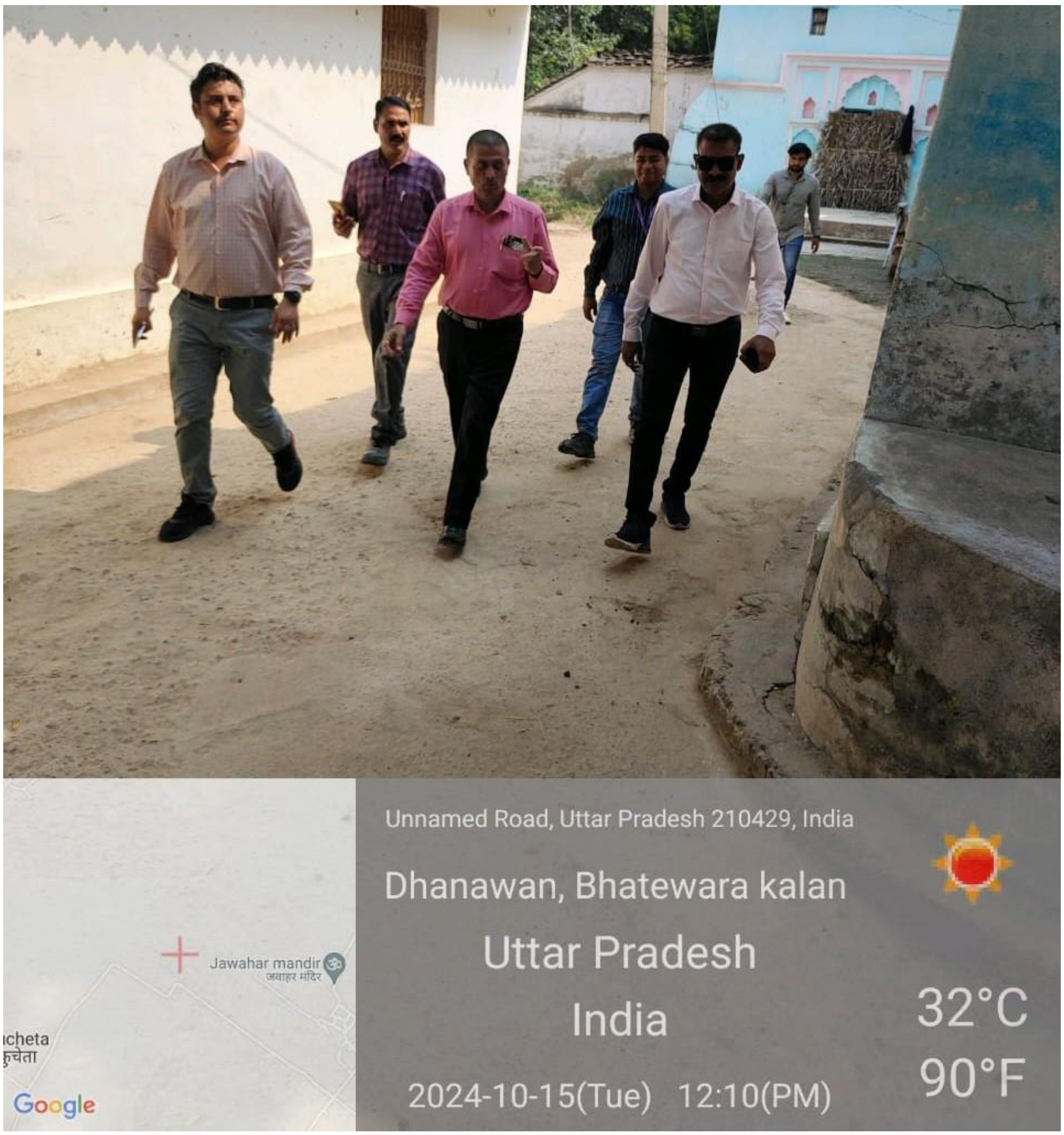

की संख्या, जातीय समीकरण, परिवारों को प्राप्त नल संयोजनों की संख्या, शक्ति संरचना, प्राथमिक विद्यालयों की संख्या, पूर्व–माध्यमिक विद्यालय, आंगनबाड़ी तथा प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र के संदर्भ में जानकारी प्राप्त की गयी। शक्ति संरचना में सर्वप्रथम ग्राम प्रधान श्रीमती ज्ञान देवी से ग्राम की समग्रता के संदर्भ में परिचर्चा किया गया। इसके साथ ही पंचायत सदस्यों से भी चर्चा करके धनावन ग्राम के संदर्भ में मूलभूत जानकारी प्राप्त किया गया। धनावन ग्राम में शासन द्वारा संचालित प्राथमिक विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री नरेन्द्र कुमार एवं शिक्षकों से वार्ता करके विद्यालय में छात्र/छात्राओं के नामांकन, मूलभूत सुविधाओं एवं नल संयोजन संबंधी जानकारी प्राप्त की गई। विद्यालय में कुल नामांकन–11 है जिसमें 08 बालक एवं 03 बालिकायें हैं। प्रधानाचार्य से प्राप्त जानकारी के अनुसार विद्यालय में ड्राप आउट की समस्या ना के बराबर है। विद्यालय में ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से स्वच्छ पेयजल की आपूर्ति नियमित रूप से हो रही है। ग्राम में संचालित आंगनबाड़ी की सहायिका श्रीमती सीमा देवी से भी बच्चों के पोषाहार, टीकाकरण एवं स्वास्थ्य के संबंध में जानकारी प्राप्त किया गया। हितधारकों से प्राप्त जानकारी के अनुसार ग्राम धनावन की कुल आबादी–125 है जिसमें कुल मतदाताओं की संख्या–65 एवं परिवारों की संख्या–14 है। ग्राम धनावान के लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि है, इसके अतिरिक्त दिहाड़ी–मजदूरी करके भी लोग जीवन–यापन करते हैं। लोगों के रहन–सहन का स्तर अत्यंत निम्न है। गांव में आधारभूत सुविधाओं की कमी है। धनावन ग्राम में कुल 19 नल कनेक्शन प्रदान किये गये हैं जिससे प्रत्येक परिवार को शुद्ध पेयजल की उपलब्धता सुनिश्चित हुई है।

नोट : *अध्ययन का उद्देश्य, उपकल्पना, प्रणाली तथा उपकरण पूर्व वर्णित विषय के अनुसार ही सुनिश्चित किया गया है।*

1.0 निदर्श निर्धारण

धनावन ग्राम की कुल जनसंख्या लगभग 125 एवं कुल परिवारों की संख्या–14 तथा नल संयोजनों की कुल संख्या 19 है। अवलोकन एवं सहभागी मूल्यांकन पर आधारित प्रस्तुत शोध में स्तरीकृत दैव निदर्शन का प्रयोग करके प्रत्येक प्रस्तर से 10 प्रतिशत लोगों का चयन न्यादर्श के रूप में अध्ययन के लिए किया गया है। इस प्रकार से गांव की कुल जनसंख्या से अलग–अलग जातियों को वर्गीकृत करते हुये समानुपात में प्रत्येक जाति से 1/10 भाग को अध्ययन में न्यादर्श रूप में सम्मिलित किया गया। कुल 125/10 = 12 न्यादर्शों, जिसमें 18 वर्ष से ऊपर के स्त्री एवं पुरुष सम्मिलित हैं, बात करके उनके जीवन स्तर पर ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से आये बदलावों को जानने का प्रयास किया गया।

इसके अतिरिक्त वर्णित अध्ययन में ग्राम धनावन से संबद्ध हितधारकों जिसमें ग्राम प्रधान श्रीमती ज्ञान देवी एवं ग्राम पंचायत के सदस्यों से योजना संचालन के बाद लोगों के जीवन स्तर में आये बदलावों के संदर्भ में परिचर्चा किया गया। ग्राम में संचालित प्राथमिक विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री नरेन्द्र कुमार एवं शिक्षकों तथा विद्यालय में नामांकित छात्र/छात्राओं से भी ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के पश्चात् उनके जीवन में

आये परिवर्तन के संदर्भ में चर्चा किया गया। ग्राम में अवस्थित आंगनबाड़ी केन्द्र की सहायिका को भी हितधारकों के रूप में सम्मिलित करके ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से बच्चों एवं माताओं के स्वास्थ्य स्तर में आने वाले बदलावों के संदर्भ वार्ता किया गया। धनावन ग्राम के सामाजिक रूप से प्रतिष्ठित एवं स्वीकृत लोगों को भी हितधारकों के रूप में सम्मिलित करके आवश्यक जानकारियां प्राप्त की गयी। इस प्रकार से प्रस्तुत अध्ययन में कुल 12 न्यादर्शों जिसमें 6 महिला एवं 6 पुरूष हैं तथा गांव के हितधारकों को सम्मिलित किया गया है।

2.0 समाविष्ट के मानदण्ड

ग्राम धनावन, विकास खण्ड चरखारी, जनपद महोबा में सरकार द्वारा संचालित योजना ''हर घर नल–हर घर जल'' के प्रभाव मूल्यांकन हेतु धनावन ग्राम की सम्पूर्ण जनसंख्या (125) का 1/10 भाग (12 न्यादर्श) और गांव के हितधारकों को अध्ययन में सम्मिलित किया गया है, जिसमें 18 वर्ष से ऊपर के स्त्री एवं पुरूष सम्मिलित हैं।

3.0 बहिष्करण के मानदण्ड

प्रस्तुत अध्ययन में धनावन ग्राम से असंबद्ध व्यक्ति को न्यादर्श एवं हितधारकों के रूप में सम्मिलित नहीं किया गया है।

4.0 परिणाम एवं चर्चा

''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा धनावन ग्राम के स्थायी निवासियों की शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, सामाजिक व्यवहार एवं महिलाओं की प्रस्थिति में आये परिवर्तन का अवलोकन एवं सहभागी मूल्यांकन के आधार पर अध्ययन किया गया है। वर्णित योजना ने गावं के लोगों को व्यापक स्तर पर प्रभावित किया है। प्रस्तुत अध्ययन से प्राप्त परिणाम इस प्रकार है–

4.1 सामाजिक परिवर्तन के संदर्भ में

इस खण्ड के अंतर्गत अध्ययन में सम्मिलित कुल 06 महिला न्यादर्शों से ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना संचालित होने के पश्चात् महिलाओं के जीवन में आये परिवर्तन संबंधी जानकारी एकत्रित की गयी है। अध्ययन में सम्मिलित इकाइयों के रूप में कुल 100 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के आने से उनके स्वास्थ्य स्तर में सुधार हुआ है। 98 प्रतिशत महिला न्यादर्शों ने बताया कि उन्हें अब दूषित जल पीने से मुक्ति मिल गयी है। कुल 94 प्रतिशत महिलाओं ने बताया कि स्वास्थ्य स्तर अच्छा होने से इलाज पर होने वाले खर्च में कमी आयी है। 92 प्रतिशत महिलाओं ने बताया कि पूर्व में जल संकट के कारण पानी दूर से भरकर लाना पड़ता था जिससे उनके शरीर में दर्द होने लगता था। अब वर्णित योजना द्वारा प्रत्येक घर तक स्वच्छ पेयजल पहुंचने से उक्त समस्या का समाधान हुआ है। 100 प्रतिशत महिला न्यादर्शों ने स्वीकार किया कि अब पेट दर्द की समस्या नहीं रहती है और खाना ठीक

से पच भी जाता है। 98 प्रतिशत महिलाओं ने बताया कि अब वह बच्चों की शिक्षा पर अधिक ध्यान दे पा रही हैं। 97 प्रतिशत महिला न्यादर्शों ने कहा कि समय की बचत होने

से परिवार के लिए अधिक समय दे पा रही हैं जिससे उनका सम्मान परिवार में बढ़ा है। इस प्रकार से यह कहा जा सकता है कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा

महिलाओं की सामाजिक प्रस्थिति में सकारात्मक बदलाव आया है और महिलायें सम्मान का जीवन जी रही हैं।

4.2 शिक्षा की स्थिति में बदलाव

वर्णित योजना द्वारा ग्राम धनावन की शिक्षा व्यवस्था में भी परिवर्तन दृष्टिगोचर हो रहा है। 93 प्रतिशत न्यादर्शों ने बताया कि पूर्व की अपेक्षा वह शिक्षा के प्रति अधिक

जागरूक हुए हैं। प्राथमिक विद्यालय के प्रधानाचार्य के अनुसार विद्यालय में नामांकित विद्यार्थियों की नियमित उपस्थिति में वृद्धि हुई है। 96 प्रतिशत न्यादर्शों ने बताया कि वह अपने बच्चों को नियमित रूप से विद्यालय भेज रहे हैं। प्रधानाचार्य के कथनानुसार

विद्यालय में नामांकित बच्चों की बोध क्षमता में वृद्धि हुई है। ग्राम प्रधान से हुई परिचर्चा के अनुसार विद्यालय में लगभग सभी सुविधाओं को उपलब्ध करा दिया गया है जिससे शिक्षा का उचित परिवेश बच्चों को मिल रहा है। 97 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि धनावन ग्राम की लड़कियों को नियमित रूप से विद्यालय भेजा जा रहा है। 98 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि बच्चों एवं बच्चियों के स्वास्थ्य स्तर में सुधार आने से उनकी शिक्षा में भी प्रगति देखी जा रही है। अध्ययनकर्ता द्वारा अवलोकन में पाया गया कि गांव के सभी बच्चे नियमित रूप से विद्यालय जा रहे हैं और अभिभावक भी बच्चों की शिक्षा के प्रति जागरूक हैं। वर्णित योजना द्वारा आपूर्ति किये जाने वाले पेयजल के उपयोग एवं अपव्यय के प्रति लोगों में जागरूकता लाने की आवश्यकता है ताकि बच्चों को दूषित जल के उपयोग से बचाया जा सके और उनके स्वास्थ्य को उन्नत करते हुए शैक्षिक गतिविधियों में उनके समग्र प्रगति को रेखांकित किया जा सके।

4.3 स्वास्थ्य संबंधी बदलाव

''जल ही जीवन है'' यह कथन तभी सार्थक हो सकता है जब स्वास्थ्य अच्छा हो और स्वास्थ्य तभी बेहतर हो सकता है, जब स्वच्छ जल की उपलब्धता प्रत्येक व्यक्ति को सुलभ हो। अध्ययन में सम्मिलित 100 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा पेट संबंधी बीमारियां कम हुई हैं जिससे उनका स्वास्थ्य स्तर बेहतर हुआ है। 97 प्रतिशत न्यादर्शों ने बताया कि अब खाना ठीक से पचता है। न्यादर्श में सम्मिलित 98 प्रतिशत उत्तरदाताओं से चर्चा करने पर पता चला कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा जल जनित एवं संबंधित बीमारियों से सुरक्षा प्राप्त हुई

है। 100 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि दूषित जल पीने से उन्हें मुक्ति मिलने के साथ ही जल संकट का भी समाधान हुआ है। न्यादर्श में सम्मिलित उत्तरदाताओं ने

बताया कि अब इलाज पर होने वाले खर्च में कमी आयी है, अब उन्हें पेट संबंधी बीमारियों के इलाज कराने हेतु कर्ज लेने से मुक्ति मिल गयी है। अध्ययनकर्ता द्वारा अवलोकन में पाया गया कि धनावन ग्राम के लोगों के स्वास्थ्य स्तर में सुधार परिलक्षित हुआ है, उनका शारीरिक एवं मानसिक स्तर उन्नत हुआ है। अध्ययनकर्ता द्वारा अवलोकन एवं न्यादर्शों से परिचर्चा में पाया गया कि ग्राम धनावन के कुछ लोगों में वर्णित योजना द्वारा आपूर्ति किये जाने वाले पेयजल के प्रति मिथक धारणायें व्याप्त हैं जिसके कारण वह इसका उपयोग नियमित रूप से नहीं कर रहे हैं, यदि उनमें जागरूकता, चेतना एवं विश्वास की भावना उत्पन्न किया जाये तो, निःसंदेह वह आपूर्ति किये जाने वाले पेयजल का नियमित रूप से उपयोग करेंगे जिससे उनका समग्र स्वास्थ्य बेहतर होगा।

4.4 सामाजिक व्यवहार में बदलाव

न्यादर्श एवं उत्तरदाताओं से प्राप्त जानकारी के अनुसार धनावन ग्राम के प्रत्येक परिवार को नल संयोजन से संतृप्त कर दिया गया है। 93 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना संचालित होने से पूर्व गांव के केवल उच्च जाति

के लोगों एवं समृद्ध परिवारों तक ही स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता थी। 100 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि अब प्रत्येक परिवार को नियमित रूप से ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के अंतर्गत पेयजल की आपूर्ति की जा रही है। 97 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से सामाजिक सौहार्द का वातावरण निर्मित हुआ है, लोगों में सहकार का भाव विकसित हुआ है और इस प्रकार से धनावन गांव में शांति का वातावरण निर्मित हुआ है। 100 प्रतिशत न्यादर्शों ने बताया कि जल

संकट के कारण होने वाले लड़ाई–झगड़ों में भी वर्णित योजना के संचालन के बाद से कमी आयी है। न्यादर्श में सम्मिलित लोगों से शादी–विवाह के संबंध में ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के प्रभाव के संबंध में चर्चा करने पर पता चला कि वर्णित योजना का शादी–विवाह पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ा है, यद्यपि कि अवलोकन एवं न्यादर्शों तथा हितधारकों से परिचर्चा में पाया गया कि स्वास्थ्य पर होने वाले खर्च की बचत से शादी–विवाह में लोगों द्वारा अधिक खर्च किया जा रहा है। लोगों के सामाजिक मूल्यों में बदलाव आने से दहेज जैसी कुरीतियों के विरूद्ध लोगों की सोच विकसित हुई है।

4.5 रोजगार के अवसर

धनावन ग्राम के अधिकतर लोग कृषि एवं दिहाड़ी–मजदूरी से आय का सृजन करते हैं। गांव के कुछ लोग रोजगार की चाह में शहरों में पलायन कर गये हैं। ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने रोजगार में विविधता को प्रोत्साहित किया है। स्वरोजगार को प्राथमिकता देने के कारण युवाओं की भागीदारी स्वरोजगार के क्षेत्र में बढ़ी है। सरकार द्वारा संचालित ऋण योजनाओं का लाभ लेकर युवाओं द्वारा स्वरोजगार के क्षेत्र में निवेश किया जा रहा है जिससे उनकी आय में वृद्धि होने के साथ ही पलायन पर भी विराम लगा है। युवाओं द्वारा पशुपालन, कुक्कुट पालन तथा मत्स्य पालन को प्राथमिकता दी जा रही है। युवाओं में आत्मविश्वास एवं स्वावलंबन की भावना विकसित हुई है, अपने गांव के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित हुआ है।

उल्लेखनीय है कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा कृत कार्य के प्रति धनावन गांव के लोगों में संतुष्टि का भाव परिलक्षित हुआ है। वर्णित योजना अपने उद्देश्यों के अनुरूप कार्य कर रही है जिससे स्वास्थ्य, शिक्षा, रोजगार, महिलाओं की दशा एवं सामाजिक व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन देखा जा रहा है।

गौरतलब है कि धनावन गांव के लोगों द्वारा पेयजल का अधिक दुरूपयोग किया जा रहा है, साथ ही शिक्षा एवं जागरूकता की कमी के कारण कुछ लोग आपूर्ति किये जाने वाले जल के सेवन से बचने का प्रयास भी करते हैं। उनमें यह धारणा व्याप्त है कि पेयजल से महक आती है जिसके कारण वह स्वास्थ्य की दृष्टि से अनुकूल नहीं है, जबकि जल को शुद्ध करने के लिए उसमें क्लोरीन मिलाया जाता है जिससे उसमें कुछ महक आती है, यह स्वास्थ्य की दृष्टि से प्रतिकूल नहीं है, बल्कि लाभदायक है। उक्त धारणा को समाप्त करने के लिए धनावन गांव में जागरूकता एवं चेतना का विकास करने की आवश्यकता है जिससे कि योजना के अपेक्षित परिणाम प्राप्त किये जा सके। इस प्रकार से यह कहा जा सकता है कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा रूपांतरकारी बदलाव आ रहे हैं। यदि लोगों में और जागरूकता लाया जाये तो अनुकरणीय दीर्घकालिक परिणाम प्राप्त किये जा सकते हैं, यद्यपि की अभी–भी अध्ययन से प्राप्त परिणाम सकारात्मक रहे हैं।

ग्राम पंचायत कुरौरा डांग, विकास खण्ड चरखारी, जनपद महोबा

प्रस्तुत अध्ययन में ''जल जीवन मिशन'' के अंतर्गत संचालित ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना के परिणामस्वरूप ग्राम पंचायत कुरौरा डांग, विकास खण्ड चरखारी,

जनपद महोबा में निवासित आबादी के जीवन–स्तर में आये बदलावों का मूल्यांकन किया गया है। अध्ययन हेतु अवलोकन एवं सहभागी मूल्यांकन प्रणाली/विधियों का प्रयोग करते हुए अपेक्षित आंकड़ों को प्राप्त करके निष्कर्ष निकाले गये हैं। इसके अंतर्गत सर्वप्रथम गांव की जनसंख्या, गांव में परिवारों की संख्या, जातीय समीकरण, परिवारों को प्राप्त नल संयोजनों की संख्या, शक्ति संरचना, प्राथमिक विद्यालयों की संख्या, पूर्व–माध्यमिक विद्यालय, आंगनबाड़ी तथा प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र के संदर्भ में जानकारी प्राप्त की गयी।

शक्ति संरचना में सर्वप्रथम ग्राम प्रधान श्री प्रमोद सिंह से ग्राम पंचायत की समग्रता के संदर्भ में बात की गयी। पंचायत सदस्यों से भी बात करके कुरौरा डांग ग्राम पंचायत की मूलभूत समस्याओं के संदर्भ में जानकारी प्राप्त की गयी। इसके अतिरिक्त ग्राम में संचालित विद्यालयों के प्रधानाध्यापक एवं शिक्षकों से बातचीत कर विद्यालय में छात्र/छात्राओं के नामांकन, मूलभूत सुविधाओं, जल संयोजन आदि की जानकारी प्राप्त की गई।

प्राप्त जानकारी के अनुसार कुरौरा डांग ग्राम पंचायत में एक प्राथमिक विद्यालय एवं एक पूर्व माध्यमिक विद्यालय सरकार द्वारा संचालित किया जा रहा है। प्राथमिक विद्यालय में कुल नामांकन संख्या–69 है जिसमें 32 बालक एवं 37 बालिकायें हैं। पूर्व माध्यमिक विद्यालय में कुल नामांकन–64 है। उक्त दोनों विद्यालय नल संयोजन से पूर्णतः संतृप्त हैं जिससे बच्चों को नियमित रूप से स्वच्छ पेयजल की प्राप्ति होती है। ग्राम पंचायत कुरौरा डांग में एक आंगनबाड़ी केन्द्र संचालित है जिसकी सहायिका का नाम श्रीमती मायावती है। आंगनबाड़ी सहायिका से बच्चों तथा शिशुओं एवं माताओं के पोषाहार, स्वास्थ्य तथा टीकाकरण आदि की जानकारी प्राप्त की गयी। उक्त ग्राम पंचायत में प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र की उपलब्धता नहीं है।

कुरौरा डांग ग्राम पंचायत की कुल आबादी–1800 है एवं मतदाताओं की संख्या–1095 है। ग्राम में कुल परिवारों की संख्या–180 है। प्रत्येक परिवार को नल संयोजन से संतृप्त कर दिया गया है जिससे प्रत्येक परिवार को स्वच्छ पेयजल की आपूर्ति

की जा रही है। न्यादर्शों एवं हितधारकों से प्राप्त जानकारी के अनुसार गांव के लोगों की आय का मुख्य स्त्रोत कृषि एवं दिहाड़ी—मजदूरी है।

नोट : *अध्ययन का उद्देश्य, उपकल्पना, प्रणाली तथा उपकरण पूर्व वर्णित विषय के अनुसार ही सुनिश्चित किया गया है।*

1.0 निदर्श निर्धारण

कुरौरा डांग ग्राम पंचायत की कुल जनसंख्या—1800 है। निदर्श निर्धारण हेतु स्तरीकृत दैव निदर्शन विधि का प्रयोग किया गया है। कुरौरा डांग ग्राम पंचायत की कुल जनसंख्या के 1/10 वें भाग को प्रत्येक प्रस्तर से अध्ययन में सम्मिलित किया गया है (1800/10 = 180)। इस प्रकार प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श के रूप में कुल 180 लोगों (महिला और पुरूष) को, जो कि कुरौरा डांग ग्राम पंचायत के निवासी हैं, सम्मिलित करके योजना के प्रभाव को जाना गया। साथ ही योजना के प्रभाव के संदर्भ में कुरौरा डांग ग्राम पंचायत के हितधारकों से भी चर्चा की गयी।

2.0 समाविष्ट के मानदण्ड

कुरौरा डांग में सरकार द्वारा संचालित योजना ''हर घर नल—हर घर जल'' के प्रभाव मूल्यांकन हेतु कुरौरा डांग ग्राम पंचायत की सम्पूर्ण जनसंख्या का 1/10 वें भाग के साथ ही ग्राम पंचायत के हितधारकों को भी अध्ययन का आधार बनाया गया, जिसमें वयस्क स्त्री, पुरूष और वृद्ध सम्मिलित हैं। अध्ययन में उन्हीं इकाइयों का चयन न्यादर्श

रूप में किया गया है जो वर्णित योजना से पूर्णतः संतृप्त हैं एवं नियमित रूप से स्वच्छ पेयजल की प्राप्ति कर रहे हैं।

3.0 बहिष्करण के मानदण्ड

प्रस्तुत अध्ययन में किसी–भी ऐसे व्यक्ति को सम्मिलित नहीं किया गया है, जो कुरौरा डांग ग्राम पंचायत से सम्बद्ध और वर्णित योजना का लाभार्थी नहीं था। साथ ही नल संयोजन से वंचित परिवारों के लोगों को भी अध्ययन में न्यादर्श रूप में सम्मिलित नहीं किया गया है।

4.0 परिणाम एवं चर्चा

सहभागी मूल्यांकन एवं अवलोकन द्वारा प्राप्त परिणामों से स्पष्ट है कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने लोगों के जीवन के विविध पक्षों को प्रभावित कर सकारात्मक बदलावों को लाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया है। प्रस्तुत अध्ययन में ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा कृत कार्य से कुरौरा डांग ग्राम पंचायत के लोगों के जीवन स्तर में आये बदलावों का वर्णन किया गया है जो निम्नलिखित है–

4.1 सामाजिक परिवर्तन के संदर्भ में

प्रस्तुत अध्ययन के इस खण्ड में कुल 180 न्यादर्शों में से 90 महिला न्यादर्शों को सम्मिलित करके उनसे प्राप्त आंकड़ों के आधार पर ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना लागू होने के पश्चात् महिलाओं के जीवन स्तर में आये बदलावों को जानने का प्रयास

किया गया है। 98 प्रतिशत महिला उत्तरदाताओं ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना लागू होने के बाद से पेट संबंधी बीमारियों में कमी आयी है। 98 प्रतिशत

उत्तरदाताओं ने कहा कि उनके स्वास्थ्य स्तर में समग्र सुधार आया है। न्यादर्श में सम्मिलित 97 प्रतिशत महिला न्यादर्शों ने स्वीकार किया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने महिलाओं के जीवन स्तर में सुधार करके उन्हें सम्मानजनक जीवन जीने का

अवसर दिया है। अध्ययन में सम्मिलित 96 प्रतिशत महिला उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया कि समय एवं धन की बचत से आय अर्जक गतिविधियों में उनकी भागीदारी बढ़ी है जिससे उनका सम्मान परिवार में बढ़ा है। 94 प्रतिशत महिला न्यादर्शों ने बताया ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना लागू होने के बाद से इलाज पर खर्च होने वाले पैसे की बचत होने से बच्चों की शिक्षा पर अधिक पैसे निवेश किये जा रहे हैं। अध्ययनकर्ता द्वारा अवलोकन एवं हितधारकों से परिचर्चा में पाया गया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा मिला, उनके स्वावलंबन में वृद्धि हुई है। महिलाओं की भूमिका परिवार में बढ़ी है। यद्यपि कि अवलोकन में यह भी पाया गया कि आपूर्ति किये जाने वाले जल में क्लोरीन मिलाने से आने वाली महक के कारण कुछ लोगों द्वारा इस जल का नियमित रूप से उपयोग नहीं किया जाता है। शिक्षा, चेतना एवं जागरूकता के अभाव के कारण लोगों में आपूर्ति किये जाने वाले जल के उपयोग के प्रति गलत धारणा व्याप्त है। अतः आवश्यक है कि इस धारणा में परिवर्तन किया जाये जिसके लिए व्यापक स्तर पर जागरूकता उत्पन्न करने की जरूरत है।

4.2 शिक्षा की स्थिति में बदलाव

कुरौरा डांग ग्राम पंचायत में अवस्थित प्राथमिक एवं पूर्व माध्यमिक विद्यालय नल संयोजन से पूर्णतः संतृप्त हैं। प्राथमिक विद्यालय के प्रधानाचार्य से हुई परिचर्चा में पता चला कि विद्यालय में ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना लागू होने के बाद से नामांकन संख्या में वृद्धि हुई है, साथ ही ड्राप आउट की दर में भी कमी देखी गयी है। प्रधानाचार्य ने बताया कि अपेक्षाकृत बालिकाओं के नामांकन दर में अधिक वृद्धि हुई है। पूर्व माध्यमिक

विद्यालय के प्रधानाचार्य के अनुसार स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता के कारण बच्चों की बोध क्षमता में वृद्धि एवं स्वच्छता में सुधार आया है। ग्राम प्रधान एवं पंचायत सदस्यों से

हुई परिचर्चा में पाया गया कि विद्यालय में मूलभूत सुविधाओं में वृद्धि होने से बच्चों की शिक्षा में सुधार आया है। अध्ययन में सम्मिलित 97 प्रतिशत न्यादर्शों के अनुसार अभिभावकों में शिक्षा के प्रति जागरूकता आयी है। 93 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि पूर्व की अपेक्षा बच्चों की शिक्षा पर अधिक निवेश किया जा रहा है। 96 प्रतिशत न्यादर्शों ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना संचालित होने के बाद से बच्चों एवं बच्चियों को नियमित रूप से विद्यालय भेजा जा रहा है। अध्ययनकर्ता द्वारा अवलोकन में

पाया गया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना संचालित होने के बाद से कुरौरा डांग ग्राम पंचायत की साक्षरता दर में वृद्धि हुई है। बच्चों की शारीरिक, मानसिक एवं सांवेगिक स्तर में सुधार आने से शिक्षा के प्रति लगाव बढ़ा है। अतएव यह कहना समीचीन होगा कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने शिक्षा की स्थिति में सुधार को प्रेरित किया है।

4.3 स्वास्थ्य संबंधी बदलाव

''हर घर नल–हर घर जल'' योजना संचालित होने के बाद से कुरौरा डांग ग्राम पंचायत के निवासियों के समग्र स्वास्थ्य में सुधार आया है। 100 प्रतिशत न्यादर्शों ने

बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता से

जल जनित बीमारियों में कमी आयी है। 100 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि पेट संबंधी बीमारियों में कमी आयी है एवं खाना ठीक से पचता है। 97 प्रतिशत न्यादर्शों ने बताया कि स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता से इलाज पर होने वाले खर्च में कमी आयी है। 100 प्रतिशत न्यादर्शों के अनुसार शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य में सुधार हुआ है। 96 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि स्वास्थ्य स्तर में सुधार आने से कार्य क्षमता में वृद्धि हुई है। अवलोकन एवं सहभागी मूल्यांकन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि वर्णित योजना ने कुरौरा डांग ग्राम पंचायत के निवासियों के स्वास्थ्य स्तर में सुधार किया है। लोगों में वर्णित योजना के प्रति संतुष्टि का भाव दृष्टिगोचर हो रहा है। ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने उक्त ग्राम पंचायत के लोगों को खुशहाल जीवन प्रदान किया है। इस प्रकार यह योजना खुशहाली का प्रतीक बनी हुई है।

4.4 सामाजिक व्यवहार में बदलाव

''हर घर नल–हर घर जल'' योजना लागू होने के पूर्व कुरौरा डांग ग्राम पंचायत के केवल समृद्ध लोगों को ही स्वच्छ पेयजल उपलब्ध था। निम्न आय वर्ग के लोग कुओं एवं तालाबों में उपलब्ध जल का उपयोग करते थे। 100 प्रतिशत न्यादर्शों के अनुसार वर्णित योजना के लागू होने के पश्चात् सभी परिवारों को स्वच्छ पेयजल की नियमित रूप से आपूर्ति हो रही है। 97 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार ग्राम में पेयजल के कारण होने वाले झगड़ों पर विराम लगा है। 97 प्रतिशत न्यादर्शों ने बताया कि वर्णित योजना के संचालित होने के बाद से सामाजिक एकता में वृद्धि हुई है, लोगों में सहकार एवं सहयोग का भाव जाग्रत हुआ है। जीवन स्तर में सुधार आने से शादी–विवाह में भी

बदलाव देखने को मिल रहा है। 91 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि दहेज के लेन–देन में कमी आयी है। गांव में मूलभूत सुविधाओं की उपलब्धता से गांव की छवि में सुधार

आने के कारण वैवाहिक संबंधों में बढ़ोत्तरी हुई है। इस प्रकार से यह कहा जा सकता है कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा कुरौरा डांग ग्राम पंचायत में सामाजिक गतिशीलता आयी है, साथ ही लोगों की सोच में भी सुधार परिलक्षित हुआ है।

4.5 रोजगार के अवसर

ग्राम पंचायत कुरौरा डांग के अधिकतर लोगों की आय का स्त्रोत कृषि, पशुपालन एवं दिहाड़ी–मजदूरी है। ग्राम पंचायत के कुछ लोग दिल्ली एवं सूरत जैसे शहरों में रोजगार प्राप्त करने के वास्ते चले गये हैं। ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने रोजगार के अनेक विकल्प प्रस्तुत किये हैं। जल संकट के समाधान होने से युवाओं का झुकाव अपने गांव की तरफ बढ़ा है। 90 प्रतिशत न्यादर्शों ने बताया कि युवाओं में पलायन की दर में कमी आयी है। युवाओं से चर्चा करने पर पता चला कि वह स्वरोजगार को प्राथमिकता दे रहे हैं। मत्स्य पालन, कुक्कुट पालन, सब्जी उत्पादन, पशुपालन आदि रोजगारपरक गतिविधियों के प्रति युवाओं में उत्सुकता है। युवाओं में ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के प्रति संतुष्टि का भाव दृष्टिगोचर हो रहा है। 96 प्रतिशत न्यादर्श में सम्मिलित युवाओं ने बताया कि वह गांव में ही रहकर स्वरोजगार करके जीवन–यापन करना चाहते हैं। इस प्रकार से ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना युवाओं में आत्मविश्वास एवं आत्मनिर्भरता को संबोधित किया है। वर्णित योजना रोजगार के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय बदलाव को प्रेरित किया है।

इस प्रकार कुरौरा डांग ग्राम पंचायत का सहभागी मूल्यांकन करने से निष्कर्ष निकलता है कि शासन द्वारा संचालित महत्त्वाकांक्षी ''जल जीवन मिशन'' योजना के अंतर्गत ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में सफल रही है। योजना द्वारा कृत कार्य के प्रति ग्राम पंचायत कुरौरा डांग के लोगों में खुशी का माहौल है। वर्णित योजना कुरौरा डांग ग्राम पंचायत के समग्र विकास को सुनिश्चित

किया है। लोगों में जागरूकता की कमी के कारण पेयजल के प्रति उत्पन्न भ्रांतियों को दूर करने के लिए व्यापक स्तर पर जन–जागरूकता एवं शिक्षा का प्रसार करने की आवश्यकता है ताकि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से प्राप्त होने वाले परिणाम को और अधिक गुणवत्तापूर्ण बनाया जा सके।